3:1-22

दुःख भोगने वाले परमेश्वर के लोगों के जैसा व्यवहार करना

(भाग 2)

समर्पण की चर्चा ने पतरस को अगुवाई दी कि वह विश्वासियों से निवेदन करे कि वे सामाजिक अधिकारियों के प्रति आदर और आज्ञाकारिता दिखाएं। दासों के सताए जाने ने उसे मसीह के सताए जाने पर मनन करवाया, परन्तु 3 अध्याय में वह समर्पण की ओर फिर से लौट कर आता है, इस बार पत्नियों का पतियों के प्रति समर्पण को लेकर। दासों और पत्नियों, दोनों को दिए गए निर्देश घरेलू संदर्भ में थे, परन्तु पत्नी और पति का संबंध दास के स्वामी से संबंध के समान कदापि नहीं था। परस्पर भावनात्मक बंधन और पुरुषों तथा स्त्रियों के लिए रूढ़िवादी सामाजिक परंपराएं पति/पत्नी के संबंध को और जटिल बना देती हैं।

पत्नियों का समर्पण अपने पतियों के प्रति (3:1-6)

[1]हे पत्नियो, तुम भी अपने पति के अधीन रहो, इसलिये कि यदि इन में से कोई ऐसे हों जो वचन को न मानते हों, [2]तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल-चलन को देखकर बिना वचन के अपनी-अपनी पत्नी के चाल-चलन के द्वारा खिच जाएँ। [3]तुम्हारा श्रृंगार दिखावटी न हो, अर्थात् बाल गूँथना, और सोने के गहने, या भाँति-भाँति के कपड़े पहनना, [4]वरन् तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है। [5]पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियाँ भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं, अपने आप को इसी रीति से संवारती और अपने-अपने पति के अधीन रहती थीं। [6]जैसे सारा अब्राहम की आज्ञा में रहती और उसे स्वामी कहती थी। इसी प्रकार तुम भी यदि भलाई करो और किसी प्रकार के भय से भयभीत न हो, तो उसकी बेटियाँ ठहरोगी।

आयत 1. तुम भी जैसे सभी मसीहियों को अधिकारियों के आधीन होना था, और दासों को स्वामियों के आधीन होना था, पतरस ने निवेदन किया कि पत्नियाँ

भी [अपने] पतियों के आधीन रहें। घर की व्यवस्था और शान्ति के लिए उन्हें अधीनता में रहना था। पतरस के शब्दों का निष्कर्ष है कि परमेश्वर ने पतियों को घर के नेतृत्व का उत्तरदायित्व दिया है। पति के नेतृत्व की पुष्टि करना सत्ता वादी तानाशाही की पुष्टि करना नहीं है। यह महत्वपूर्ण है कि पतरस के निर्देश पतियों को नहीं वरन पत्नियों को संबोधित हैं। पतरस ने यह नहीं कहा कि, "पतियो अपनी पत्नियों को नियंत्रण में ले लो," वरन "हे पत्नियो, तुम भी अपने पति के अधीन रहो।" जब स्वेच्छा से किया जाए तो समर्पण मान घटाने वाला नहीं होता है। जब तक कि पत्नी स्वेच्छा से पति के नेतृत्व और उसके साथ जुड़े अधिकार को स्वीकार नहीं करती है, वह उसे निभा नहीं सकता है - कम से कम तब तो नहीं जब वह स्वयं मसीह का अनुयायी होकर जी रहा है।

समर्पण से, जैसा स्वामियों का दासों पर, उसी प्रकार पुरुषों का स्त्रियों के ऊपर किसी प्रकार की आत्मिक या बौद्धिक श्रेष्ठता होने का कोई तात्पर्य नहीं है। पतरस की चिंता व्यवस्थित पारस्परिक सामाजिक संबंधों के होने से है। जब किसी के भी पास कार्य करने के लिए अधिकार या उत्तरदायित्व नहीं होता है तब अव्यवस्था राज्य करती है। दोनों, पतरस और पौलुस (इफिसियों 5:22-6:4; कुलुस्सियों 3:18-21) एक मन थे जब उन्होंने मसीही परिवार के पतियों और पिताओं को अपने परिवार की आत्मिक, भावनात्मक, और भौतिक भलाई का उत्तरदायित्व लेने का निवेदन किया। वे दोनों ही यह दावा करते हैं कि पत्नियाँ नेतृत्व निभाने में अपने पतियों की सहायता करें।

अपेक्षा किया जा सकता है कि प्राचीन यूनानी-रोमी संसार में, पत्नियों का पतियों के अधीन रहना, इसके आधुनिक पश्चिमी संसार की तुलना में, संस्कृति में यह अधिक गहराई से जुड़ी हुई थी। समता-वादी पश्चिमी संस्कृति में, अधीनता किसी के लिंग पर आधारित होता था जो कि पूर्वजों के लिये अधिक आक्रामक होने के लिए उपयुक्त है। आधुनिक पाठक के लिये अकसर यह तय करना कठिन होता है कि वह कैसे बाइबल की विधियों को अपने समकालीन दुनिया में लागू करेगा, क्योंकि ये उन समाजों के उद्देश्य थे जिनका मानदण्ड उसके अपने समाज से बिल्कुल अलग थे। यह प्रश्न का पूरी रीति से हल निकालना यहाँ पर सम्भव नहीं है, लेकिन अब हमें ध्यान देना चाहिए कि नया नियम अपने पाठकों को सामाजिक संरचनाओं के एक निर्धारित सीमा में बाध्य नहीं करता है। अधीनता पति और पत्नियों के बीच चर्चा को नहीं रोकता है, जहाँ पर पारस्परिक रूप से संतोषजनक शब्दों में पारिवारिक मुद्दों पर काम किया जाता है। यह एक मान्यता है कि कभी-कभी विवाह दो लोगों की दृढ़-इच्छा से बना होता है। ऐसे मामलों में, पति और पत्नी में एक दूसरे के साथ यह जानने की होड़ लगी होती है कि किसकी इच्छा प्रबल होती है। इस प्रकार का प्रतिस्पर्धा प्रायः जीवन भर या जब तक तलाक नहीं हो जाता, चलता रहता है। दूसरे विवाहो में कोई भी भार उठाने, जिम्मेदारी स्वीकार करने और कार्य करने के लिए तैयार नहीं होता है। इन समस्याओं का समाधान यह है कि पति की जिम्मेदारी नेतृत्व की होती है। जब वह इसे स्वीकार करता है तो परमेश्वर को प्रसन्न करता है।

इस बात की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि परिवार पतरस के उपदेश का संदर्भ है। व्यापार जगत या अन्य सामाजिक संरचनाओं से कोई तात्पर्य नहीं हैं। कलीसिया में लिंग भूमिकाओं पर मार्गदर्शन के लिये, हमें कुछ और सोचना होगा। 1 कुरिन्थियों 14:34, 35 और 1 तीमुथियुस 2:11, 12 में यह स्पष्ट है कि पौलुस अपेक्षा करता था कि पुरुष कलीसिया में शिक्षा और अधिकार के मामलों में नेतृत्व करने के लिये तैयार रहें। घर और कलीसिया परमेश्वर के निर्माण और परमेश्वर की निगरानी के संस्थान हैं। इन दोनों में उसने नेतृत्व को इस स्तर तक सरल बनाया है: परमेश्वर ने कहा है कि वह मसीही पुरुषों से उदाहरण बनने और मार्ग की अगुआई करने की अपेक्षा करता है। फिर भी, ऐसे शब्दों में कुछ भी नहीं है जो लिंग के आधार पर आत्मिक, नैतिक या मानसिक श्रेष्ठता का अर्थ प्रदान करते हैं। घर और कलीसिया के बाहर के रिश्तों में, चाहे वह सामाजिक हो या ईश्वरीय, न पुरुष न ही स्त्री में असमानता हो।

पतरस का उपदेश है कि पत्नियों को पतियों के अधीन रहना अब स्त्रियों के प्रति अपमान नहीं है, बल्कि सलाह है जैसे कि कर्मचारी अपने नियोक्ताओं के अधीन होते हैं या जिस प्रकार नागरिकों को विधिवत रूप से गठित कानून का पालन करना पड़ता है। समकालीन पश्चिमी संस्कृति में, एक पत्नी के पास पर्याप्त वेतन हो सकता है, व्यापार या सरकार में एक जिम्मेदार पद हो सकता है, या वह एक नौकरशाही नौकरी पर काम कर सकती है। वह घर में पूरे दिन-भर या पूर्णकालिक काम कर सकती है या आठ-से-पाँच घंटे नौकरी कर सकती है जैसा उसका पति करता है। उसकी अन्य भूमिकाएँ या ज़िम्मेदारियाँ जो भी हो, पतरस की मसीही स्त्री को अपील है कि वह अपने पति को परिवार के मुखिया के रूप में प्रोत्साहित करे और उसका समर्थन करे। यह सलाह आधुनिक स्त्री के जीवन में भी लागू होती है, जैसे एक प्राचीन महिला के लिये था।

कभी-कभी यह सच होता है कि कोई पुरुष पति या पिता के रूप में अपनी ज़िम्मेदारी का दुरुपयोग या त्याग कर सकता है। जब एक पति लापरवाह, गैर-जिम्मेदार, या क्रूर हो, तो मसीही पत्नी को अपने परिवार को वह जो भी आत्मिक नेतृत्व दे सकती है, देना चाहिए। जब पति विश्वासी न हो पर पत्नी हो, तो वह अपने पति में जो भी अच्छाई देखती है, उसका समर्थन और प्रोत्साहन करे। **इसलिये कि यदि इन में से कोई ऐसे हों जो वचन को न मानते हों, बिना वचन के अपनी-अपनी पत्नी के चाल-चलन के द्वारा खिंच जाएँ।** "वचन को न मानना" "सुसमाचार को न मानने" के समान है (4:17)। ऐसे मामले में पति या तो मसीह के संदेश के प्रति उदासीन था या सकारात्मक रूप से विरोधी था। जब पत्नी अकेले मसीही होती थी, तो प्राचीन संसार में उनकी स्थिति पहले से अनिश्चित होती थी। अपेक्षा की जाती थी कि एक पत्नी अपने पति के धर्म का पालन करेगी, न कि अन्य मार्ग में चलेगी। पतरस चाहता था कि मसीही पत्नी अपने शान्त और सहायक स्वभाव से अपने पति के लिये एक उदाहरण बने। मसीही न केवल शब्दों से, परन्तु अपने स्वभाव के द्वारा सिखाता है।

KJV जिस तरह से इस वाक्यांश को भ्रामकता से रेखांकित करता है उसमें

है "वे भी बिना वचन के खिंच जाएँ।" "वचन" के लिए अंग्रेजी शब्द word के पहले निश्चित उपपद से पता चलता है कि परमेश्वर का वचन कर्ता है। पतरस यह नहीं कह रहा था कि कुछ मामलों में परमेश्वर के "वचन" में अविश्वासी पति के बदल जाने के बारे में कोई बात नहीं मिलेगा। NASB जब इसका अनुवाद "बिना वचन के" करता है तो सही अर्थ देता है। पतरस ने कहा कि कुछ मामलों में कोई विशेष वचन जीवन साथी को खिच नहीं पाएगा। बल्कि, वचन जो ईश्वरीय व्यवहार द्वारा समर्थित हो, मसीह के लिए अविश्वासियों को खिंच पाएगा। उसके "खिंच" लिए जाने का ठीक वही समय मसीह की महिमा और पति का उद्धार के लिए होगा। पतरस ने जो कुछ कहा था, उसका आशय कुछ और भी था। पतरस के पाठकों में पति अपने पत्नियों के लिये पति की तुलना में विश्वासी होने चाहिए। अधिकतर मसीही पत्नियाँ सामान्यतः अपने पतियों को वचन की शिक्षा के द्वारा खींचने का प्रयास करती थीं। जब पति मसीही नहीं होता था, तो पतरस ने स्पष्ट रूप से पत्नी को मसीह के लिए अपने पति को जीतने की पहल की मंजूरी दे दी।

यह उल्लेखनीय है कि यूनानी-रोमी संसार में जो शक्तिहीन थे या ऐसे जिनके (गरीब, महिला, दास) पास कम से कम शक्ति होती थी - ऐसी ही शक्ति के साथ उन्होंने एक संदेश का प्रचार किया जिसने अन्ततः सभी प्रतिद्वंद्वी देवताओं और दर्शनों पर विजय प्राप्त की। मसीह के सुसमाचार के भीतर यह एक संदेश था कि परमेश्वर के सामने सब एक समान थे। नासरत के यीशु की सेवा करने के एक अपरिहार्य परिणाम है, दृढ़ विश्वास है कि परमेश्वर मानव जाति के बीच समानता की इच्छा रखता है। परमेश्वर पक्षपात नहीं करता। और न ही उसके लोगों को पक्षपात करना चाहिए (याकूब 2:1)।

नया नियम के युग के तुरंत बाद, कुछ शताब्दियों तक मसीहियत ने गंभीर आलोचकों को आकर्षित किया। दूसरी सदी में, उनमें से एक, सेल्सस नाम का एक मनुष्य ने मसीहियों की निंदा करने के लिए एक लंबा आदेश पत्र लिखा था। समय के साथ, वह नष्ट हो गया और भूला दिया गया। जबकि, तीसरी सदी में, मिस्र में ओरिगेन नामक एक अलेक्जेनड्रीय मसीही ने सेल्सस का खंडन करते हुए प्रत्युत्तर में लिखा था। अपने उत्तर में ओरिगेन ने सेल्सस के बहुत से काम को पुन: प्रस्तुत किया है कि हमारे पास एक अच्छा विचार है जिसे बाद में कहना था। सेल्सस ने जो लिखा था, उसका एक हिस्सा यहाँ दिया गया है:

> निजी घरों में हम ऊन कतरने वाले, मोची, धोबी, और सबसे अनपढ़ और अनौपचारिक ग्रामीण देखते हैं, जो अपने से बड़े और अधिक बुद्धिमान स्वामी के सामने कुछ भी कहने की साहस नहीं कर पाते हैं। परन्तु जब भी वे निजी रूप से बच्चों को और कुछ महिलाओं को अपने साथ पकड़ लेते हैं, उदाहरण के लिये, उन्हें कुछ आश्चर्यजनक बातें कही जाती हैं, जैसे कि उन्हें अपने पिता और स्कूल के शिक्षकों पर ध्यान नहीं देना चाहिए, परन्तु उन्हें उनकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए; वे कहते हैं कि ये व्यर्थ की बातें हैं और वे कोई समझ नहीं रखते हैं, और वास्तव में वे न तो जानते हैं और न ही कुछ भी करने में

सक्षम हैं, परन्तु वे व्यर्थ बकवाद करनेवाले समझे जाते हैं।[1]

सम्भवतः उनकी यह इच्छा नहीं थी, परन्तु उद्धरण यह साक्षी देता है कि सेल्सस और ओरिगेन दोनों ने संघर्ष में कमजोर और शक्तिहीन (गरीब, महिला, दास) की भूमिका को मान्यता दी, जिससे पहले कुछ मसीही सदियों में मसीह यूनानी-रोमी संसार में प्रसिद्ध हुआ।

आयत 2. एक पत्नी का **चाल चलन** जिससे मसीह के लिये अपने पति को प्राप्त किया जा सकता था; वह अधीन होना होता था, तौभी **यह भय सहित पवित्र चाल-चलन** भी होना था। पतरस केवल पत्नियों के विषय में चिंतित नहीं था बल्कि इसलिये भी कि उसके सभी पाठकों के जीवन का एक नैतिक आचरण हो जो उसके समकालीनों के लिये उचित साक्षी ठहरे (1:15; 2:12)। अन्यजातियों को देखने के साथ सुनने की भी जरूरत थी कि उन्होंने अपने मसीह को पहन लिया था और चुने हुए लोगों में शामिल थे। पतरस विश्वासियों से भक्तिहीन लोगों तक अपने वचनों और अपने व्यवहार दोनों ही के साथ पहुँच रखने की अपेक्षा करता था। शब्द ἐποπτεύω *(एपोपतुओ)* का अनुवाद "देखकर" किया गया है, जिसका प्रयोग यहाँ और 2:12 में किया गया है, परन्तु नया नियम में और कहीं नहीं पाया जाता। "देखकर" की तुलना में यह अधिक प्रभावशाली शब्द है। यह एक पति की तस्वीर को चित्रित करता है, जो अपनी सोच को बदल रहा है और अपनी पत्नी के विश्वास अंगीकार और जिस रीति से वह चाल चलन रखती है, के बीच सम्बन्धों के बारे में विचार कर रहा है। उसका "भय" के साथ चाल-चलन रखना लाभ की बात समझी जाती है कि उसका यौन व्यवहार सम्मान के योग्य है, परन्तु इस शब्द का अर्थ कहीं अधिक है। इससे मन की सिधाई और अच्छाई की ओर एक स्वभाव का पता चलता है जो एक वचन था, किसी भी बात से समझौता नहीं था। यूनानी कहते हैं कि उनका "भय के साथ चाल चलन" का तात्पर्य "भय में" (ἐν φόβῳ, *एन फोबोई)* जीवन बिताना था। पतरस का तात्पर्य शायद ही था कि पत्नी को अपने पति के निर्मम आतंक में रहना था। उसने "भय" का प्रयोग उसी अर्थ के साथ किया था जो "परमेश्वर से भय" (2:17) मानने की आज्ञा में पाया जाता है। उसे अपने पति के लिये सम्मान और बदलाव को दिखाना था; परन्तु उससे भी बढ़कर, उसे अपना आचरण प्रगट करना था ताकि उसका पति यह देख सकें कि उसका पवित्र चाल चलन परमेश्वर के सामने एक भय पूर्ण, आदर के दृष्टिकोण से आगे बढ़ता जाता था। जब NASB "एन फोबोई" को "आदरपूर्ण" के रूप में अनुवाद करता है, कोई अनुचित कार्य नहीं करता है।

आयत 3. पतरस ने मसीही स्त्री को सलाह दी थी कि वह देखने में कितनी आकर्षक थी से अधिक उसे इस बारे में चिन्तित रहना चाहिए कि वह कौन थी और कैसा व्यवहार करती थी। धर्मी पत्नी को "भय सहित पवित्र चाल-चलन" से अपने जीवन का श्रृंगार करना था। मसीह में **उसके श्रृंगार दिखावटी न हो।**[2] पतरस के शब्दों में कोई सुझाव नहीं था कि एक महिला को शारीरिक रूपरेखा से

पूरी रीति से निश्चिन्त होना था। यह विपरीत लिंग को अपील करने का तरीका था जो एक मुद्दा बन गया था। पतरस ने महिलाओं का सम्मान किया, और वह चाहता था कि वे अपने सम्मान और पहचान के आधार पर स्वयं का सम्मान करें, जो वे थे, न कि उससे कि वे क्या पहनती थीं।

यूनानी-रोमी जगत में समकालीन नैतिक वादियों ने पतरस के शब्दों को दोहराया। जे. रामसे माइकल्स ने प्लुटार्क, जो डेल्फी के एक दार्शनिक और याजक, पतरस के समकालीनों में से एक थे के शब्दों पर ध्यान आकर्षित किया: "यह सोने या कीमती पत्थरों या चमकीला लाल रंग नहीं है जो उसे ऐसे बनाता है, परन्तु जो भी उसे सुसज्जित करती है वे ऐसे गुण हैं जो गरिमा, अच्छे व्यवहार और विनम्रता की ओर इशारा करती है।"[3] इसी प्रकार, पौलुस ने लिखा,

> वैसे ही स्त्रियाँ भी संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आप को संवारे; न कि बाल गूँथने, और सोने, और मोतियों, और बहुमूल्य कपड़ों से, पर भले कामों से। क्योंकि परमेश्वर की भक्ति करनेवाली स्त्रियों को यही उचित भी है (1 तीमुथियुस 2:9, 10)।

पतरस अपने समकालीन अधिक संयमी मन वाले लोगों से एक मन वाला था। अभिप्राय है कि, पतरस का पुरुषों के लिये भी आदेश था। जैसे स्त्रियाँ जिनका मन बाहरी सौंदर्य और सजावटों पर था, वैसे ही पुरुष भी थे जो ऐसी बातों से आकर्षित थे। जब एक स्त्री मुख्य रूप से स्वयं को अपनी शारीरिक अपील के आधार पर प्रस्तुत करती है, तो वह उन पुरुषों को आकर्षित करती है जो एक स्त्री में शारीरिक रूप-रेखा से परे थोड़े ही देखते हैं। समय के साथ शारीरिक अपील की बुनियाद पर बने रिश्ते पतले वस्त्र पहनने के समान है। पुरुषों के लिए सलाह यह है कि उन्हें अपनी पत्नी में जिस प्रकार वह स्वयं को दिखाने को संवारती है उससे अधिक देखना चाहिए।

पतरस अधिक विशिष्ट था। उसने कहा कि **बाल गूँथना, और सोने के गहने, या भाँति-भाँति के कपड़े** पहनने में सजावट नहीं होना चाहिए। पतरस के साथ समसामयिक संसार में बनाए गए कलाकृति उस समय की सभ्य स्त्रियाँ जिस प्रकार के कपड़े पहनती थी को दिखाता है। बाह्य स्वरूप पर अत्यधिक ध्यान कोई आधुनिक आविष्कार नहीं है। पतरस के शब्दों में कोई सुझाव नहीं है कि वह अपने पाठकों के एक बड़े हिस्से का धनी होने की अपेक्षा करता था, ताकि इस प्रकार के व्यापक पोशाक का खर्च वहन कर सके। पतरस ऐसे मानसिकता को सम्बोधित कर रहा था जो बाहरी सुन्दरता के बारे में अधिक चिन्तित था। यह मानसिकता धनी और निर्धन दोनों में समान रूप से पाई जा सकती है। प्रेरित शायद ही कह रहा था कि एक स्त्री के लिये सोने की अंगूठी और कंगन पहनना, नया कपड़ा पहनना, या अपने बालों को सजाना पाप था। बल्कि, वह स्त्रियों से कह रहा था कि जब वे ऐसे मामलों के बारे में अधिक चिन्तित हो जाते हैं, तो वे अपने पतियों को अधिक गंभीर मामलों में अपील करने की अपनी क्षमता से समझौता करते हैं।

आयत 4. नकारात्मक रूप से, पतरस मसीही पत्नियों से नहीं चाहता था कि अपने पतियों को सिर्फ बाहरी रूपरेखा के आधार पर अपील करें; सकारात्मक रूप से, वह उनसे चाहता था कि **नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे**। प्रेरित ने अपनी अपील की शुरुआत पत्नी से अधीनता का आग्रह करते हुए किया, परन्तु यह स्पष्ट है उसने समान निष्क्रिय महत्वहीन अधीनता की अपेक्षा नहीं की थी जो पति था या जो उसने किया था। यह पत्नी का अपने पति पर प्रभाव होने का मामला नहीं है, जो पतरस के लिये चिन्ता का विषय था परन्तु जीने का ढंग था। इस प्रकार पत्नी अपने जीवन के ढंग से अपने पति को प्रभावित करती और अपने अनुरूप ढालती है, जैसे कि वह अपने जीवन के अनुरूप उसे ढालता है। जब वह अपने पति को छिपा हुआ और **गुप्त मनुष्यत्व** के आधार पर अपील करती है, तब वह परमेश्वर की महिमा प्रगट करती है। जबकि प्रेरित स्त्रियों को सम्बोधित कर रहा था, उसकी सलाह पुरुषों के लिये भी उतना ही महत्वपूर्ण था। पुरुषों को भी, अपनी पत्नियों से छिपा हुआ मनुष्यत्व के आधार पर अपील करना चाहिए। यह बाह्य सोना, चाँदी, कपड़ा, सौंदर्य प्रसाधन नहीं है, जिसकी परमेश्वर से अपील करते हैं।

पतरस ने आश्चर्यजनक रूप से मानवीय स्वभाव का आशावादी आकलन प्रदर्शित किया। अभिप्राय यह है कि एक पति का बाहरी स्वभाव जो भी था, छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व था, जो अपनी पत्नी के ईश्वरीय चाल चलन को उसके बाहरी श्रृंगार के कारण महत्व देता था। प्रतीत होता है यह कथन पत्नी पर अपने पति के आत्मिक हित के लिये जिम्मेदारी का एक अस्वास्थ्यर्थपूर्ण हिस्सा रखता है। परन्तु, सन्दर्भ के पुनर्विचार पर पाठक के परिप्रेक्ष्य को नवीनीकृत किया जाएगा। पतरस ने इस प्रश्न को सम्बोधित किया: "एक मसीही पत्नी स्वयं को अपने पति को कैसे प्रस्तुत करना चाहिए जिससे कि वह उसे उचित रीति से प्रभावित कर सके?" वह इस प्रश्न को नहीं संबोधित कर रहा था: "जब एक पति सुसमाचार को महत्वहीन या तुच्छ जानता है तो इसके लिये कौन जिम्मेवार है पति या पत्नी?" कुछ पुरुषों के पास "छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व" नहीं होता है जो कि उनकी पत्नी के चाल-चलन पर मसीह के प्रभाव से प्रभावित होगा, परन्तु पत्नी को यह करके दिखाना है यदि उसने ऐसा किया हो। उसे उस "छिपे हुए मनुष्यत्व" से अपील करना है चाहे वह उसमें हो या नहीं हो।

"नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे," पतरस ने कहा, **क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है।** किसका मूल्य परमेश्वर की दृष्टि में बड़ा है यह सभी मसीही जीवन की चिन्ता है। परमेश्वर को सोने या महंगे कपड़े पहनने वाले की कोई चिन्ता नहीं है। "मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है" (1 शमूएल 16:7)। "अविनाशी" शब्द का प्रयोग मसीही पत्नी के व्यवहार के लिए एक अनन्त परिप्रेक्ष्य में तत्काल चिन्ता रखता है। सोना "नाशवान" (1:7) है; नम्रता और मन की दीनता अविनाशी है। "अविनाशी" "यीशु मसीह के प्रगट होने पर" बने रहेंगे (1:7); सोने के गहने नहीं। पतरस ने जिस गुण को स्त्रियों को अपनाने के लिये

आग्रह किया, वह गुण जो नाश नहीं होता, वह नम्रता और मन की दीनता थी।

प्रत्येक विशेषण आने वाली परीक्षा का गुण बताता है। NASB का अनुवाद "नम्रता" (πραΰς, *प्रौस)* शब्द यीशु के पहाड़ी उपदेश (मत्ती 5:5) की यीशु की सूची में है। कभी-कभी इसका का अनुवाद "कोमल" किया जाता है। मन की दीनता कमजोर भावना के समान नहीं होती है। मसीही पत्नी को स्वयं को अपने पति को सौम्य और गम्भीर स्वभाव के साथ प्रस्तुत करना है। यह स्वभाव का एक प्रकार है जिसका अधीन होने में कोई अपराध नहीं होता है। कोमल, नम्र स्वभाव के विपरीत, वह जो, "परमेश्वर की दृष्टि में जिसका मूल्य बड़ा है" उस पर मन न लगाकर स्वयं के तरीके पर जोर देता है, स्वयं की संतुष्टि के विषय अधिक चिन्तित होता है।

NASB में शब्द "शान्त" (ἡσύχιος, *हेसुक्सिओस)* संज्ञा का विशेषण रूप है जो 1 तीमुथियुस 2:12 में पाया जाता है: "और मैं कहता हूं, कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।" "चुपचाप रहे" का शाब्दिक अर्थ "शान्ति में रहना" या चुपचाप रहना होता है। दोनों शब्दों में नम्रता और मन की दीनता का सुझाव देते हैं। स्त्री अपने पति की सहमति या आशीर्वाद की अनुपस्थिति में मसीही बनने के लिये यूनानी-रोमी समाज में एक सम्मानजनक स्त्री के लिये एक साहसिक कदम होगा। पतरस ने किसी भी प्रकार के अपराध का सामना करने के लिये उससे आग्रह किया जो उसके पति ने सम्मान और आदर दिखाने के लिये जागृत मन से प्रयास के द्वारा उसकी स्वतंत्रता पर ले लिया हो। एक मसीही बनने का तात्पर्य उसके स्वतंत्र इच्छा पर जोर देने की बात नहीं थी, बल्कि उसकी इच्छा परमेश्वर को प्रसन्न करने की थी। इस आयत में "आत्मा" शब्द का तात्पर्य उसके भीतर अनश्वर आत्मा से नहीं है, बल्कि उसकी अन्तर आत्मा, जो उसके स्वभाव का उल्लेख करता है। (देखें 1 कुरिन्थियों 4:21; गलातियों 6:1, जहाँ "नम्रता की भावना" एक कोमल स्वभाव को संदर्भित करता है।)

"परमेश्वर की दृष्टि में" "नम्रता और मन की दीनता," का "मूल्य बड़ा" क्यों है? क्योंकि एक ही स्वभाव एक पति, एक गुरु या एक पुलिसकर्मी के अधीन होने की माँग करता है, जो परमेश्वर के अधीन होंगे, उन लोगों को इसकी आवश्यकता है। बाद में इस पत्री में पतरस ने नीतिवचन 3:34 का उदाहरण दिया क्योंकि "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है" (5:5)। उसने कहा, "इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए" (5:6; देखें याकूब 4:10)। गर्व राज्य के अधिकार, कार्य स्थल के अधिकार, घर के अधिकार, और उद्धारकर्ता के अधिकार के अधीनता के रास्ते में मिलता है। अधीनता का मार्ग और परमेश्वर के साथ शान्ति विनम्रता और सम्मान की खेती है। जब तक कोई अपने निर्णय और विचार को सम्मान नहीं करता, तब तक कोई अधीनता नहीं हो सकती - जब इसमें विवेक के शामिल होने की कोई बातें न हो - क्योंकि वह दूसरे के अधिकार का सम्मान करता है।

आयत 5. पतरस ने मसीही स्त्रियों को स्मरण कराया था कि जो इस चाल चलन की खोज वह उनसे कर रहा था वह उनके आत्मिक पूर्वजों द्वारा किया गया था। **प्राचीन समय** ऐसे समय होते हैं जब अब्राहम और उसके वंशज परमेश्वर के लोग थे (देखें इब्रानियों 1:1, 2)। कलीसिया तथा लोगों और इस्राएल के लेखन के बीच निरन्तरता 1 पतरस के इसी धागे में बुना गया है। **पवित्र स्त्रियाँ**, जिनकी कहानियों को बाइबल में लिखा गया है, नम्रता और मन की दीनता के साथ अपने-अपने पतियों के अधीनता में रहने के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न कर स्वयं को सँवारती थीं। स्त्रियों की पवित्रता जिसके लिये पतरस ने अपील की थी, में यह दिखाया गया था कि वे **परमेश्वर में आशा रखती थीं**।

पौलुस के पत्रियों में विश्वास की महत्वता को देखते हुए, शायद कोई पतरस से यह कहने की अपेक्षा कर सकता है कि "पवित्र स्त्रियाँ" "परमेश्वर पर विश्वास" करती थीं। प्रेरित ने इसी के समान "आशा" शब्द का प्रयोग किया क्योंकि प्रभु की वापसी की अपेक्षा उसके मन में घर कर चुकी थी। अपने पाठकों के समान, "जिन्होंने अपने-अपने प्राण को विश्वासयोग्य सृजन हार के हाथ में सौंप [दिए थे]" (4:19), "पवित्र स्त्रियाँ" जो "परमेश्वर पर आशा" करती थीं। न केवल उनकी अधीन होने में, परन्तु उनकी आशा में अधिक सूक्ष्मता के कारण वे पतरस के पाठकों के लिये एक आदर्श थे। अगली आयत में सारा के लिये महत्वपूर्ण संकेत दिए जाने से पता चलता है कि "पवित्र स्त्रियाँ" पतरस के स्मरण में थी, वे मूल पुरुष अब्राहम, इसहाक और याकूब की पत्नियाँ थीं। जैसे मूल पुरुष लोग इस्राएल के पिता थे, इस्राएल की मूल माता सारा, रेबेका, लिआ और राहेल थीं। ये पवित्र स्त्रियाँ अपने आप को अपने ईश्वरीय चाल चलन के अनुसार इसी रीति से **अपने आपको संवारती** और **अपने-अपने पति के अधीन रहती थीं**।

पतरस ने उस समय के विषय ने बातें नहीं की जब एक पवित्र स्त्री स्वयं को एक अपवित्र पुरुष के साथ वैवाहिक रिश्ते में पाती थी। सम्भवतः प्रेरित कहता कि इस प्रकार के मामले में "नम्रता और मन की दीनता" के साथ अधीनता अभी भी वैसे ही क्रम में था जैसा कि अधीनता ने उसे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य जीवन जीने की अनुमति दी थी। यह ध्यान देने योग्य है कि सभी तीन क्षेत्रों में जहाँ पतरस ने नागरिक, दास और पत्नी को - अधीन होने के लिये कहा था - वह सुव्यवस्थित मान्यताओं को बना रहा था। सामान्य रीति से सरकार शान्तिपूर्ण लोगों को उनके प्रतिदिन की गतिविधियों के विषय में दोषी नहीं ठहराती थी। सामान्य रूप में स्वामी अपने दास का दुरुपयोग नहीं करता था, यदि दास का उसकी सम्पत्ति होने के अलावा अन्य कोई कारण नहीं होता था। परिवार के लिये नियम जो पतरस ने सम्बोधित किया गया था, वह था कि पति और पत्नी दोनों मसीही थे, या जहाँ पति, जबकि एक मसीही नहीं था, फिर भी अपने परिवार के लिये सहायक था। प्रेरितों के काम 5:28, 29 में, पतरस ने एक अवसर पाया जब वह यरूशलेम के अधिकारियों के अधीन नहीं पाया गया था। तथा उन परिस्थितियों की कल्पना करना कठिन नहीं है, जब एक दास को अपने स्वामी की आज्ञा का उल्लंघन या एक पत्नी को पति की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना

चाहिए।

पतरस ने तर्क दिया कि किसी को भी सरलता से अधीनता को अस्वीकार नहीं करना चाहिए, चाहे वह एक नागरिक, एक सेवक या एक पत्नी हो। प्राधिकरण की एक व्यवस्थित श्रृंखला सामान्य रूप से उन लोगों का समर्थन करती है जो अच्छा, ईश्वरीय जीवन जीना चाहते हैं। दो कारणों में से किसी एक के लिये अधिकारी के अधीन होने के लिये मना कर सकते हैं: (1) हो सकता है कि परमेश्वर के द्वारा उसे इतना निर्देश दिया गया कि जो उसका अधिकारी माँगता है कि वह करे वह वैसा नहीं कर पाए। (2) वह अपनी इच्छाओं का पालन कर सकता है और इसके लिये कोई श्रेष्ठ कारण नहीं है क्योंकि वह ऐसा करना चाहता है। यह प्राधिकरण को प्रत्युत्तर देने का दूसरा प्रकार है जिसे पतरस ने कहा था कि वह मसीही जीवन में हिस्सा नहीं ले सकता।

आयत 6. सारा का चाल चलन "पूर्वकाल" की "पवित्र स्त्रियों" का एक उदाहरण है, जो "अपने आप को इसी रीति से संवारती थीं।" उसके व्यवहार ने पतरस की सलाह को बल दिया क्योंकि सारा इस मामले में किसी न किसी रीति से मसीही चाल चलन का एक उदाहरण थी। सारा अपने पति के अधीन रहने के कारण उत्पत्ति में एक विशेष घटना को आकर्षित करती है। जब अब्राहम के कबीले मम्रे में डेरा डाले थे, तो तीन लोग दिखाई दिए थे। मूल पुरुष द्वारा उनकी पहुनाई किए जाने के पश्चात्, उन्होंने उनसे प्रतिज्ञा की कि सारा जल्द ही एक पुत्र को जन्म देगी। सारा ने उन्हें सुना और इस विचार पर हँस पड़ी। यह अविश्वसनीय था कि अब्राहम और सारा जैसे एक बूढ़े जोड़े को एक बच्चा हो सकता है। स्वयं से बात करते हुए, इस संदर्भ में सारा ने अब्राहम को "मेरे स्वामी" (उत्पत्ति 18:12) कहा। यह वाक्यांश है "मेरे स्वामी" जो कि पतरस जिस बात पर जोर देना चाहता था उस ओर इंगित करता है। सारा ने **अब्राहम को स्वामी कहते हुए** उसके प्रति अपनी अधीनता को दिखाया।

यद्यपि पतरस इस सम्भावना पर विचार कर चुका था कि एक विश्वास में जीने वाली पत्नी अपने आपको अविश्वासी पति के साथ वैवाहिक रिश्ते में जुड़ा पाती है, और जबकि उसने सुझाव दिया था कि "भय सहित पवित्र चाल चलन" से उसे मसीह के लिये प्राप्त किया जा सकता है, प्रभु के लिये अविश्वासी पतियों को जीतना पतरस का विषय नहीं था। उसका विषय था मसीही पत्नियों को मसीही पतियों के अधीन होना। यूनानी-रोमी घरों के लिये पुरुष प्रभुत्व प्रभाव को ध्यान में रखते हुए, यह मानना चाहिए कि बहुसंख्यक मामलों में मसीही विश्वास को अपनाने में पत्नियों ने अपने पतियों की आज्ञाओं का पालन किया होगा। सारा का उदाहरण, जब वह अपने पति की आज्ञाकारी थी, "उसे स्वामी कहती थी," और सामान्य स्थिति को सम्बोधित किया जहाँ पर दोनों पति-पत्नी विश्वासी थे। कुछ मसीही पत्नियाँ यह मान सकती हैं कि क्योंकि पुरुष और स्त्रियाँ समान रूप से छुटकारा में भागी होते हैं, वैवाहिक सम्बन्धों में समानता बढ़ा दी जाती है। प्रेरित ने कहा कि मामला यह नहीं था। उसने पत्नियों से सारा के कदमों पर चलने और अपने पतियों की आज्ञा मानने का आग्रह किया।

जबकि अधीनता और आज्ञाकारिता के बीच अंतर थोड़ा ही है, यह अनापेक्षाकृत है कि पतरस को सारा अब्राहम के "अधीन रहती थी" के बदले सारा अब्राहम की आज्ञा में रहती थी, कहना चाहिए। बच्चे माता-पिता का पालन करते हैं, दास स्वामी का पालन करते हैं, और नागरिक कानूनों का पालन करते हैं, परन्तु सामान्य रूप से पत्नियों को पति के आज्ञा पालन की सलाह नहीं दी जाती है। शायद प्रेरितों ने "अधीनता" के बदले मजबूत शब्द "आज्ञाकारी" दर्ज कर दिया, क्योंकि पिछले दरवाजे की ओर कुछ कठोर-बुद्धिमति स्त्रियाँ थीं जो घर में स्वतंत्रता के लिये तर्क-वितर्क कर रही थीं, जिसके कारण कुछ दृढ़ मसीही ठोकर खा सकते थे।

परिवार के वंशज होने के कारण यहूदी अब्राहम और सारा के बच्चे थे। मसीहियों का दावा था कि वे भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा किए गए परमेश्वर की प्रतिज्ञा के उत्तराधिकारी थे, क्योंकि वे परमेश्वर के अभिषिक्तों पर विश्वास करते थे और उसकी आज्ञा मानते थे। विश्वास के माध्यम से वे अब्राहम और सारा के आत्मिक वारिस थे। दावा जो अन्यजाति मसीहियों ने अब्राहम और सारा के नाम पर किया था उसमें थोड़ी सी भी सच्चाई नहीं थी, क्योंकि वे वापस अब्राहम तक अपनी पैतृक वंशावली में अपने वंश का पता नहीं लगा पाए। यूहन्ना बपतिस्मा दाता सही था। परमेश्वर इन पत्थरों से अब्राहम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है (मत्ती 3:9)। पतरस ने अन्यजाति मसीही पत्नियों से कहा कि वे सारा के सन्तान थे जब उनका जीवन वैसा था जैसा सारा का जीवन था, जब वे अपने पतियों के अधीन थे और जो सही था वही करते थे। सारा की सन्तान बनने के लिये एक सशर्त पहलू था। **इसी प्रकार तुम भी यदि भलाई करो ... तो उसकी बेटियाँ ठहरोगी।** वे उतने ही सारा के सन्तान थे जिस अधिकाई से वे वैसा व्यवहार करते थे, जैसे सारा का व्यवहार था।

पतरस ने अपनी सलाह का समापन मसीही पत्नियों को उलझन उत्पन्न करने वाली बात कहकर किया। उसने पत्नियों से कहा कि वे सारा की सन्तान थीं जब उन्होंने **किसी प्रकार के भय से भयभीत न होकर** वही किया जो सही था। इस बिंदु पर "भय" क्यों आया? क्या सारा प्रेरित के मन में अभी भी थी? यदि हाँ, तो सारा के उदाहरण में क्या बात थी जो मसीही पत्नियों को भय नहीं करना सिखाएगी? इसके अतिरिक्त, वह क्या था कि इन मसीही पत्नियों के लिये भय का कारण बन सकता है? हम सारा के बारे में प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं। क्योंकि वह साहस या निर्भयता का उदाहरण नहीं है, इसलिये यह कहने में सुरक्षित है कि वह अब सोच से बाहर है। फिर भी, यह अनिश्चित है कि इस वाक्यांश से पतरस का क्या अर्थ है।

"किसी प्रकार के भय से भयभीत न हो" का कम से कम तीन सम्भावित अर्थ हैं: (1) शायद पतरस ने मसीही पत्नियों से कहा था कि, उन्हें अपना पूरा प्रयत्न कर इन मामलों को परमेश्वर की देखभाल में छोड़ देना चाहिए। उन बातों से भयभीत मत हो जो चिन्ता और अनिश्चितता को लाते हैं, उन लोगों के लिये जिनकी आशा इस संसार तक सीमित है। जबकि आशा और भरोसा का

सकारात्मक कथन देने का यह असामान्य रूप से एक अकस्मात तरीका होगा, यह वही हो सकता है जो पतरस कह रहा था। (2) शायद यह विरोधियों के लिये एक वैकल्पिक सन्दर्भ था, मसीही पत्नियाँ अपने अविश्वासी पतियों से यही अपेक्षा रखती थीं। समस्या यह है कि इस अनुच्छेद में पता चलता है कि पतरस की पत्नी के अधिकांश प्राप्त कर्ता मसीही महिलाओं के अविश्वासी पति थे। कुछ बातें निश्चित है। परन्तु, जब पतरस ने सारा का अब्राहम पर अधीन होने के उदाहरण का प्रयोग किया, जिसने संकेत दिया कि पतरस पत्नियों को अपने-अपने पतियों के अधीन होने के लिये आग्रह कर रहा था, जिसमें से अधिकांश लोग स्वयं ही विश्वासी हुआ करते थे। (3) इन सब पत्रियों में पतरस के पाठकों के सभी पीड़ाएं स्पष्ट थीं। पतरस का तात्पर्य था कि मसीही पत्नियां, क्योंकि उन्होंने सभी विश्वासियों में बहुत कुछ साझा किया था, उन्हें विरोध और परीक्षाओं से भयभीत होना नहीं था, जिसने उन सभी को पीड़ा दी थी। जो परमेश्वर के नियन्त्रण में था वह कह रहा था, "लोगों के डराने से मत डरो, और न घबराओ" (3:14); "सब बातों का अन्त तुरन्त होनेवाला है" (4:7)। दूसरे शब्दों में, पतरस कह रहा था, "संसार के क्रोध को आपको भय से दबाए जाने की अनुमति न दें।"

पत्नियों का उनके पतियों द्वारा आदर किया जाना (3:7)

7वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो, और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएँ रुक न जाएँ।

पतियों के लिये सलाह पत्नियों की अपेक्षा अधिक संक्षिप्त है, परन्तु इन कुछ शब्दों में बातों का एक बड़ा आदान-प्रदान है। परिवार में नेतृत्व की स्थिति इसी जिम्मेदारी के साथ चलता है। पति को अपने परिवार में तानाशाह होने का कोई लाइसेंस नहीं दिया गया है। उसे अपनी पत्नी की बात सुनना, आदर करना और सम्मान करना है।

आयत 7. सरकारों और स्वामियों के लिये व्यावहारिक आदान प्रदान की कोई शुल्क नहीं होने के साथ अधीनता के पिछले दो अनुदेशों को जोड़ा गया था। यह केवल अधीनता ही है जिसकी आज्ञा मसीही पत्नियों को दी गई है जो मसीही **पतियों** के दायित्व से संतुलित किया जाता है कि वे अपनी **पत्नियों** के प्रति विचार और सम्मान दिखाते हैं। जब मसीह की शिक्षाओं ने प्राचीन समाज का सामना किया, तब उन्होंने स्त्रियों की स्थिति को ऊँचा किया। प्राचीन साहित्य से प्राप्त बहुत से उदाहरण हो सकते हैं; जो विचारों को दिखाते हैं कि किस प्रकार कई पुरुष स्त्रियों को देखते थे। उदाहरण के लिये, यहूदी इतिहासकार जोसेफस द्वारा एक कथन; यहूदी कानून का उसके रोमी ग्राहकों के बारे में जानकारी का वर्णन करता है। उन्होंने कहा कि कोई भी गवाही दो या तीन गवाहों के आधार पर तय की जानी थी, और फिर कहा, "स्त्रियों की चंचलता और लैंगिक ढिठाई के

कारण उनकी गवाही स्वीकार नहीं की जाए।"[4] दूसरे स्थान पर उन्होंने एक कथन पवित्रशास्त्र का बता दिया, "एक स्त्री अपने पति से सभी बातों में निम्न है,"[5] जबकि, स्पष्ट है कि, पवित्रशास्त्र ऐसे किसी भी बात के बारे में नहीं कहता है। किसी भी आकलन में, ऐसे कथनों में स्त्री के प्रति निम्न आदर दिखाया जाता था। इसके विपरीत, पतरस ने पतियों को निर्देश दिया कि **उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं।**

क्योंकि विषय पत्नियों का अपने-अपने पतियों के अधीन रहना ही है, यह सुझाव दिया जा सकता है कि पति को पत्नी के अधीन होना है, **ठीक वैसे ही जैसे** वह अपने पति के अधीन होती है; परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है। इस मामले में यूनानी शब्द ὁμοίως *(होमोइओस)* का अर्थ है "इससे बढ़कर" या "इसके अतिरिक्त।" पत्नी, को अपनी ओर से, अपने पति के अधीन रहना है, और पति, को अपनी ओर से, अपनी पत्नी के साथ **बुद्धिमानी से** रहना है। वह ऐसा उच्च स्तर तक करता है क्योंकि वह "उसका आदर करता है, यह समझकर कि दोनों वारिस हैं।" प्रेरित ने एक विषय बना दिया कि घर में पतियों और पत्नियों को एक दूसरे से नम्रता और दया से व्यवहार करना चाहिए।

मसीही पति और पत्नी एक ही छुटकारे और एक ही आशा के भागी हैं। घर के भीतर पत्नियों का अधीन होना कोई सुझाव नहीं लाता है कि वे परमेश्वर के समक्ष समान होने अतिरिक्त कुछ हैं। जब पतरस ने पति से कहा कि उसकी **पत्नी निर्बल पात्र** है क्योंकि वह एक **स्त्री है,**[6] वह यह स्पष्ट कर रहा था: सामान्यतः एक स्त्री शारीरिक रूप से एक पुरुष के समान मजबूत नहीं होती है। पति, यदि उस तरह का व्यक्ति हो, जो अपनी पत्नी के साथ कठोरता का व्यवहार कर सकता है। वह शारीरिक दुरुपयोग कर करनेवाला हो सकता है। पतरस ने संक्षेप में कहा, "आपके पास अपनी पत्नी से दुर्व्यवहार करने का ताकत है, परन्तु ऐसी बात पूरी रीति से मसीही व्यवहार की सीमा से बाहर है।" ऐसा तभी नहीं होगा, जब पति अपनी पत्नी के साथ "बुद्धिमानी से" रहता है - जो ज्ञान के अनुसार, सम्मान को दिखाता है। स्त्री नैतिक या आत्मिक किसी भी अर्थ में "निर्बल" नहीं है। यदि कुछ, 3:1 सुझाव देता है कि किसी न किसी रीति से कई परिस्थितियों में, स्त्री अपने पति से आत्मिक रूप से मजबूत होती है। अपने पति को परमेश्वर की नजदीक में लाने का उसके पास अवसर हो सकता है।

प्रेरित ने दो कारण बताया है कि क्यों मसीही पति को "उसका आदर" करना चाहिए: (1) क्योंकि वह "जीवन के वरदान की वारिस" है, और (2) **जिससे** [पति की] **प्रार्थनाएँ रुक न जाएँ।** 1:4 में, प्रेरितों ने अपने पाठकों को स्मरण कराया था कि एक अविनाशी मीरास जो उनके लिये स्वर्ग में रखी थी। जब उसने पत्नी को "संगी वारिस" कहा था, तो वह यह कह रहा था कि परमेश्वर के साथ किसी का रिश्ता, स्वर्गीय मीरास के लिये किसी की आशा का लिंग के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था। फिर भी, एक मसीही पति के पास अपनी पत्नी के साथ दुर्व्यवहार करना उसके अधिकार में था। पतरस ने कहा कि यदि एक पति अपनी पत्नी से दुर्व्यवहार करता है, तो वह परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर पाएगा और उसकी

प्रार्थनाएँ रुक जाएँगी। परमेश्वर के साथ विचारों का आदान-प्रदान कठिन हो जाती है, और भी बोझ बढ़ जाता है, जब पति अपनी पत्नी की अधीनता का लाभ से दुर्व्यवहार करके उठाता है।

इस अनुच्छेद और 1 कुरिन्थियों 7:5: "तुम एक दूसरे से अलग न रहो; परन्तु केवल कुछ समय तक आपस की सम्मति से कि प्रार्थना के लिये अवकाश मिले" के बीच एक सम्बन्ध है। घर के जीवन और परमेश्वर के साथ जीवन आपस में बारीकी से जुड़े हुए होते है। जब कोई पुरुष अपनी पत्नी से सम्मान के बदले और कुछ चाहता है, तो वह परमेश्वर के विरुद्ध पाप करता है। प्रार्थना, जो कि सब से बड़ा धार्मिक कार्य है, रुक जाती हैं जब घर में समान शांति नहीं होती। पत्नी से दुर्व्यवहार के कारण पुरुष और परमेश्वर के बीच की डोरी टूट सकती है। यह कहना बहुत अच्छा नहीं है कि परमेश्वर उस पुरुष का जो अपनी पत्नी के साथ दुर्व्यवहार करता है हिसाब लेगा।

घर पर जीवन परमेश्वर के साथ किसी के सम्बन्ध में एक अन्य प्रकार से समस्याओं का कारण हो सकता है, जो 1 कुरिन्थियों 7 में पौलुस द्वारा सम्बोधित किया गया है। पति, पत्नी, या दोनों अपने साथी के शारीरिक, भावनात्मक और सामाजिक रिश्ते से इतने अभिभूत हो सकते हैं कि स्त्री या पुरुष परमेश्वर को जीवन के किसी भूले बिसरे कोने में ढकेल देता है। यदि एक दम्पत्ति विश्वास करता है कि ऐसा हो रहा है, तो पौलुस ने कहा कि दोनों आपस में सहमत हो सकते हैं; कि वे स्वयं को एक दूसरे से कुछ समय के लिये अलग रहने के लिये परमेश्वर से विचारों का आदान-प्रदान करने के लिये, प्रार्थना में स्वयं को दे सकते हैं। दोनों मामलों में, यहाँ 1 पतरस 3:7 और 1 कुरिन्थियों 7 में, यह स्पष्ट है कि आत्मिक जीवन और घरेलू जीवन आपस में जुड़े हुए हैं।

पतरस ने यह तर्क देने में बिल्कुल देरी नहीं की कि परमेश्वर पुरुष और स्त्री के लिये इच्छा रखता है कि वे जीवन भर के लिये विवाह के बन्धन में बन्ध जाएँ। जब सभी पक्षों की ओर से समझौता हो जाए तो इस बिन्दु पर बहस करने की कोई आवश्यकता नहीं है। एकल विवाह बाइबल में श्रेष्ठ विवाह मानी जाती है। सेक्स परमेश्वर की ओर से मिला एक वरदान है। अन्य वरदानों के समान इसका भी आनन्द लिया जाना चाहिए। उसी समय, यह काम में इच्छा की संतुष्टि से कहीं बढ़कर है। जब पुरुष और स्त्री वाचा के बन्धनों और विवाह के विश्वास के भीतर अपनी कामुकता व्यक्त करते हैं, तो इससे बड़ी खुशी और कहीं नहीं होती है। यह भी सच है कि जब सेक्स केवल मजे के लिये होता है, तो जल्द ही यह मजेदार भी नहीं होता। जब एक व्यक्ति यौन लालसा को संतुष्ट करने के लिये दूसरे का उपयोग करता है, तब कोई बन्धन, कोई प्रेम, और कोई प्रतिबद्धता नहीं होता है इसका परिणाम बर्बरता और घृणा होता है। शायद परमेश्वर द्वारा दिया गया कोई भी वरदान मानवीय यौन क्रिया की तुलना में अच्छाई की उत्तमता से भरपूर नहीं है। शायद किसी भी वरदान में इससे अधिक बुराई की सीमा नहीं है जब अन्तरंगता और प्रतिबद्धता से इसका तलाक कर दिया जाता है।

आरम्भ में जब पुरुष अकेला था, तब परमेश्वर ने उसके लिए एक स्त्री बनाई,

जो उसका साथी बनने के योग्य थी। यदि उस पुरुष के लिये यौन प्रसन्नता परमेश्वर की प्राथमिक चिन्ता होती, स्त्री बनाने के समय वह जनानखाना बना सकता था। अदन की वाटिका में कोई बहु विवाह नहीं था। वाटिका में पहला जोड़ा अस्तित्व में आया। वहाँ परमेश्वर ने मानव परिवार का सदा के लिये मार्गदर्शन करने के लिये एक नियम ठहरा दिया: "इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक तन बने रहेंगे" (उत्पत्ति 2:24)।

धार्मिकता के कारण दुःख उठाने वालों पर आशीष (3:8-17)

परमेश्वर की आशीषों द्वारा माँगा गया पवित्र जीवन (3:8-12)

[8]अतः सब के सब एक मन और कृपामय और भाईचारे की प्रीति रखनेवाले, और करुणामय, और नम्र बनो। [9]बुराई के बदले बुराई मत करो और न गाली के बदले गाली दो; पर इसके विपरीत आशीष ही दो, क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने के लिये बुलाए गए हो। [10]क्योंकि जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है, वह अपनी जीभ को बुराई से, और अपने होंठों को छल की बातें करने से रोके रहे। [11]वह बुराई का साथ छोड़े, और भलाई ही करे; वह मेल मिलाप को ढूँढ़े, और उसके यत्न में रहे। [12]क्योंकि प्रभु की आँखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उनकी विनती की ओर लगे रहते हैं; परन्तु प्रभु बुराई करनेवालों के विमुख रहता है।

आयत 8. इस आयत में, पतरस अधीनता के बारे में अपने कहे गए सभी बातों का सारांश प्रस्तुत करना चाहता था। ये शब्द सभी विश्वासियों के प्रति निर्देश के रूप में दिए गए थे, चाहे वे दास या स्वामी, पत्नियाँ या पति, पुलिसकर्मी या निजी नागरिक थे। पहले के आयतों में, पतरस ने विश्वासियों के व्यवहार को गैर-विश्वासियों के प्रति सम्बोधित किया था। परमेश्वर के साथ सही रिश्ता बढ़ता जाता है, जिस रीति से कोई अपने साथी मनुष्यों के प्रति व्यवहार करता है, परन्तु मसीही - से - मसीही बन्धन में विशेष ध्यान की आवश्यकता है (देखें गलातियों 6:10)। कुलुस्सियों 3:12-14 में पौलुस ने उन गुणों की अधिक व्यापक सूची तैयार की जो एक दूसरे के प्रति मसीहियों के चाल-चलन में मार्गदर्शन करते थे। अपनी ओर से, पतरस ने पहले से ही चाल-चलन की रीति की एक सूची तैयार की थी, जो कि लोगों को एक दूसरे के साथ व्यवहार: बैर भाव, छल, कपट, डाह और निन्दा को दूर करके, (2:1) करने के तरीके को अनियन्त्रित करने के समान था। विश्वासियों के देह में व्यवहार का एक बड़ा अन्तर होना था। प्रत्येक शब्द जिसका प्रयोग पतरस ने किया था, टिप्पणी करने का अवसर देता है।

बचाए गए और आज्ञाकारी विश्वासियों के समुदाय में उनके एक साथ के जीवन में सब के सब **एक मन के** होना चाहिए। पसंद करने का उनका एक मन

होना चाहिए। यूनानी शब्द ὁμόφρων *(होमोफरोन)*, जिसका शाब्दिक अर्थ है "एक मन का होना," जो नया नियम में केवल यहाँ पाया जाता है। विश्वासियों के बीच एकता नया नियम में एक न खत्म होने वाला विषय है। दूसरी सदी के आरम्भ में कलीसिया का अगुवा इग्नेशियस ने दलीलों के अनुसार अपने पाठकों से आग्रह किया कि वे "आज्ञाओं के अभ्यस्त हो जा जैसे एक वीणा अपनी तारों के।"[7] पतरस का ध्यान मसीहियों में "सब के सब एक मन" होने की उनके लिये एक विनती करने की थी कि सभी एक ही स्वभाव में भागी हों, वे जो व्यर्थ कहा सुनी बातों पर अपनी पीठ घुमा देते हैं जो उत्साह और आनन्द के शरीर को नाश करने में सक्षम था। यह शायद कलीसिया के हर मुद्दे पर जिनका सामना उसने किया था; इसी रीति से विचार करने लिये विश्वासियों को एक पुकार थी। जबकि अन्त तक एक दूसरे के साथ सम्मान और तर्क करने के लिये यह सलाह थी कि मसीही जीवन के अंगीकार और अभ्यास में हर कोई दूसरे को समर्थन करता था।

कृपामय शब्द यूनानी शब्द συμπαθής *(सुमपाथेस)* से निकला है। पतरस न केवल अपने पाठकों से चाहता था कि वे एक मन के हों, बल्कि यह भी चाहता था कि उनकी सोच भी एक हो ताकि वे एक ही भावनात्मक बन्धन में भागी हों। इब्रानियों के लेखक ने कहा कि हमारा महायाजक, यीशु मानवीय निर्बलताओं में हमारे साथ सहानुभूति रखता है (4:15)। सहानुभूति के लिये अनुमोदन का कोई प्रभाव नहीं है। किसी को निर्बलता और दूसरे के संघर्षों के साथ सहानुभूति हो सकती है, जबकि यह आश्वस्त है कि उसका व्यवहार स्वयं का और प्रभु के लोगों के शरीर का अपमान करता है। यह शब्द, पिछले शब्द के समान, इसके संज्ञा रूप में केवल नया नियम में ही पाया जाता है।

NASB शब्द (φιλάδελφος, *फिलाडेलफोस)* का अनुवाद **भाईचारे** की प्रीति रखनेवाले के लिये करता है की गुणवत्ता "आपसी भाई प्रेम" या "आपसी दया भाव" उनका चित्रण करने के लिये होता है, जो कि यीशु के प्रभु होने का प्रचार करते हैं। इस रूप में, शब्द केवल यहाँ नया नियम में पाया जाता है, यद्यपि पतरस ने 1:22 में इसी के समान शब्द का प्रयोग किया था। यह विशेषण पिछले शब्द को आगे बढ़ाता है और गति प्रदान करता है। केवल एक दूसरे की भावनाओं में सहभागी होने के लिये विश्वास करने वाले नहीं हैं, उन्हें भाइयों और बहनों की भलाई की चिन्ता करनी चाहिए, जिनके जीवन, आशा और भाग्य एकजुट हो गए हैं। मसीही लोग एक परिवार हैं।

पूर्वकाल के लोग भावना का केन्द्र अकसर आँतों को मानते थे, न कि हृदय को। प्रेरितों के अगले विशेषण ने विश्वासियों से एक दूसरे के प्रति "स्वस्थ आँतों" का आग्रह किया (εὔσπλαγχνος, *उस्प्लाग्च्नोस)*। NASB में **दयालु** के लिए kindhearted शब्द है, जो एक अच्छा अनुवाद है, यद्यपि प्राचीन चिकित्सा साहित्य में इस शब्द प्रयोग किसी व्यक्ति के स्वस्थ आँत थे, का शाब्दिक रूप से वर्णन करने के लिये किया जाता है। नया नियम केवल यहाँ और इफिसियों 4:32 इस शब्द का उपयोग करता है, यद्यपि अन्य शब्द जिसका अर्थ है "दयालु" या "दया," वह आम है। पतरस अपने पाठकों की भावनाओं की जाँच करना जारी

रखता है, गहन भावनात्मक बन्धनों को विकसित करने के लिये उन पर ध्यान केन्द्रित करता है जो पुरुषों और स्त्रियों को एक करते हैं या मिलाते हैं।

विशेषणों की इस सूची में अंतिम शब्द, ταπεινόφρων (*टापेइनोफ्रोन*), विशेष रूप से रुचिकर है। NASB इस शब्द का अनुवाद **नम्र बनो** के रूप में करता है। धर्मनिरपेक्ष, यूनानी-रोमी जगत मन की नम्रता पर कोई बड़ा मूल्य नहीं रखता था, दिन का अच्छी रीति से जन्मा सक्रियता से सार्वजनिक रूप से प्रशंसा की माँग करता था। वे अपनी उपलब्धियाँ प्रसारित करने के बारे में चिन्तित नहीं थे।[8] पश्चिमी संस्कृति में, शायद घमण्ड के बारे में कोई छोटे में छोटा होना सीखता है। यह संदेहजनक है कि अब हमने अधिक नम्र होना सीख लिया है। नम्रता मन की एक अवस्था है, जिसमें से किसी ने अपने आंतरिक मूल्य के लिये सही काम किया है, इससे प्रशंसा पाने के लिये नहीं है। यदि दूसरे शब्दों को भाइयों और बहनों के प्रति किसी के स्वभाव पर निर्देशित किया गया है, तो यह एक आन्तरिक मनुष्यत्व होता है। मसीही को उन लोगों की भलाई की ओर उन्मुख होना चाहिए, जिसने अपने विश्वास का साझा किया; वह श्रेय या प्रशंसा प्राप्त करने के विषय में चिन्तित नहीं है।

आयत 9. प्रेरित का विचार मसीहियों के गैर-विश्वासियों से सम्बन्धित होने की दिशा में आगे बढ़ने लगी थी। कुछ आयतों (3:13) में, वह एक विरोधी संसार की ओर विश्वासियों के दृष्टिकोण को सम्बोधित करेंगे। पिछली आयत में शामिल सभी गुण **बुराई के बदले बुराई मत करो और न गाली के बदले गाली दो** असंगत थे, परन्तु एक मसीही को इस तरह के व्यवहार को विश्वासियों और गैर-विश्वासियों दोनों के सामने अस्वीकार करना था। मसीही के किराया में कभी भी प्रतिभागियों का कोई हिस्सा नहीं हो सकता था। पहले ही पतरस ने यीशु को एक आदर्श के रूप में बताया था: ". . .गाली नहीं देता था" (2:23)। रोमियों पत्री में पौलुस ने चेतावनी दी थी, "अपने सताने वालों को आशीष दो; आशीष दो श्राप न दो" (रोमियों 12:14)। उसने कहा, "बुराई के बदले किसी से बुराई न करो" (रोमियों12:17)। रोमियों और 1 पतरस के बीच समानताएँ मननशील हैं।

यह सच है कि परमेश्वर की चिन्ता के प्रति पुराना नियम पलटा निर्धारित करता है (व्यवस्थाविवरण 32:35; नीतिवचन 20:22), परन्तु यह लेक्स तालिओनिस, पलटा लेने का कानून से बदला गया था: "आँख के बदले आँख का, और दाँत के बदले दाँत का, और हाथ के बदले हाथ का, और पाँव के बदले पाँव का, और दाग के बदले दाग का, और घाव के बदले घाव का, और मार के बदले मार का दण्ड हो" (निर्गमन 21:24, 25)। अर्नेस्ट बेस्ट ने एक मृत सागर लेख का विवरण दिया जो समुदाय के सदस्यों को "उजियाला के सभी पुत्रों को प्रेम ... और अन्धकार के सभी पुत्रों से घृणा करने (के लिये) प्रोत्साहित करता था।"[9] यीशु ने आचार संहिता (मत्ती 5:39) के रूप में पलटा लिया जाना को अस्वीकार कर दिया था। पतरस ने भी ऐसा ही किया। छल और निन्दा कलीसिया को दबाने के प्रयास में विरोधी समाज द्वारा प्रयोग किए जाने वाले आक्रामक हथियार थे। सबसे घृणित निन्दा का परिचालन किया गया। किसानों ने फैलाया कि जब

मसीही प्रभु के दिन इकट्ठे होते थे तब वे रक्त पीते थे। कुछ ने कहा कि उन्होंने एक बच्चे का बलिदान किया और नरभक्षी बन गए। मसीही लोगों ने विभिन्न तरीके से प्रतिक्रिया व्यक्त की है। पतरस ने कहा कि उन्हें इस तरह के प्रतिशोध के साथ कुछ नहीं करना चाहिए।

मसीहियों का न केवल बुराई से अधिक बुराई के प्रति जवाब देने के लिए मना किया गया है, उन्हें बुराई का बदला भलाई के साथ चुकाने को कहा गया है। जब श्राप दिया गया और अपमान किया गया, तो जिसने मसीह की आत्मा को धारण कर लिया था, उसे बदले में आशीष देना था। यीशु ने भी यही कहा, "बुरे का सामना न करना; परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे" (मत्ती 5:39)। अपराधी पर आशीष होने की बात कहना, चुप रहकर नम्रता के साथ उत्तर देने से अधिक अर्थ रखता है। इसका अर्थ है कि उस व्यक्ति की भलाई की इच्छा और प्रचार करना। इसका अर्थ है उसके लिये लम्बा जीवन, अच्छा स्वास्थ्य, और समृद्धि सभी वस्तुएं जो आराम से जीने के लिये उपयोगी होते हैं। पतरस ने नकारात्मक रूप से कहते हुए आशय दिया कि कड़वाहट जहरों को अच्छा बनाए रखता जो मसीह के समान जीने वाले जीवों को खाता है। पौलुस ने लिखा, "बुराई से न हारो" "परन्तु भलाई से बुराई का जीत लो" (रोमियों 12:21)।

अपमानित किए जाने पर बदले में "आशीष" देना, अच्छाई से बुराई पर जय पाना मसीही अभ्यास की परिधि पर नहीं है। यह इस आधार है। प्रेरित ने अपने पाठकों को स्मरण कराया, **क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने के लिये बुलाए गए हो। एक दृष्टि के साथ, यीशु मसीह के प्रगट होने** (1:7) की ओर, पतरस ने विश्वासियों को स्मरण कराया कि उनका मीरास (1:4) उनके बुराई के बदले अच्छाई के साथ अभिन्न अंग था। उनके मीरास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा वह जीवन था, जब उन्होंने स्वयं को प्रभु के पद चिह्नों पर चलने के लिये समर्पित कर दिया। जब मसीही आशीष देते हैं तो उन्हें आशीष मिलती है। मसीह के समान जीवन अनन्त आशीष के लिये एक प्रस्तावना नहीं है; बल्कि यह अनन्त आशीष के लिये चुकाया जाने वाला मोल है। मसीही जीवन स्वयं में एक आशीष है।

आयत 10. सच्चाई के समर्थन में उसने कहा था, और दूसरे स्तर पर सच्चाई को आगे बढ़ाने के लिये, प्रेरित ने भजन 34:12-16 का उद्धरण दिया। मुख्य रूप में उद्धरण LXX से है, इब्रानी पुराना नियम का यूनानी अनुवाद जो यूनानी बोलने वाले संसार में वर्तमान में था जिसे पतरस ने सम्बोधित किया था। पूरा भजन संहिता 34 दबाए गए लोगों को आश्वस्त करता है कि परमेश्वर अपने लोगों को उद्धार करता है, एक संदेश जिसे पतरस अपने सताए हुए पाठकों को व्यक्त करना चाहता था। उसने पहले से ही भजन संहिता 34:8 के शब्दों को लिया था: "क्योंकि तुम ने प्रभु की कृपा का स्वाद चख लिया है" (2:3)। **अच्छे दिन** [जीवन] **को देखने के लिए** इस वर्तमान युग में जीने वाले जीवन को इस भजन संहिता से संदर्भ करता है। पतरस भी विश्वास करता था, कि यदि कोई

व्यक्ति इस युग में एक अच्छा जीवन पाता है, वह **अपनी जीभ को बुराई से, और अपने होंठों को छल की बातें करने से रोके रहे**; परन्तु पतरस के मन में और भी बहुत कुछ था। एक मसीही हमेशा उस समय की ओर अपनी आँखों पर दबाव डालता है जब विश्वास दिखाई देगा। । जैसा कि 1:6-9 और 4:12-14 में, विश्वासी "यीशु मसीह के प्रगट होने" की प्रतीक्षा करते हैं, परन्तु इस बीच उनका आनन्द अभिव्यक्ति से परे है। जीवन और अच्छे दिन अभी हैं, परन्तु वे भी प्रतीक्षा करते हुए हैं।

जीभ के विषय में पतरस और याकूब का मन एक ही था जो किसी के जीवन में भक्ति के लिये एक बैरोमीटर के रूप में होता है। याकूब ने कहा, इसलिये कि हम सब बहुत बार चूक जाते हैं: जो कोई वचन में नहीं चूकता, वही तो सिद्ध मनुष्य है; और सारी देह पर भी लगाम लगा सकता है (याकूब 3:2)। जिस भजन संहिता को पतरस ने उद्धृत किया है, आश्वस्त करता है कि जब जीभ अनैतिक हो जाए, तो कोई जीवन नहीं हो सकता है, कोई अच्छा दिन नहीं हो सकता है। जब मसीहियों को निन्दा और बुरी इच्छा से पीड़ित किया गया, जीभ का नियन्त्रण ईश्वरीय जीवन के लिये अधिक महत्वपूर्ण हो गया। क्या उन्होंने बुरे बोलने और छल के लिये सहारा लिया था, उन्होंने न केवल स्वयं पर परमेश्वर की अस्वीकृति लाया होगा, परन्तु अपने गैर-मसीही पड़ोसियों से अतिरिक्त घृणा को अपने ऊपर लेने वाले थे।

आयत 11. जीभ का समुचित नियन्त्रण और उपयोग जीवन के मार्ग के लिये है अत्यन्त जरूरी है जिसके लिये मसीह ने अपने लोगों को बुलाया है, इसके अन्य कारक भी हैं। भजन संहिता कहता है कि परमेश्वर के पुरुष या स्त्री **बुराई का साथ छोड़े, और भलाई ही करें**। यह भी, कि उसके लिये आहार का हिस्सा है जो "अच्छे दिनों को देखेगा।" यीशु ने एक उल्लेखनीय विरोधाभास को बताया है, जब उसने कहा, "मैं तुम से सच-सच कहता हूं, कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है। जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है; वह अनन्त जीवन के लिये उस की रक्षा करेगा" (यूहन्ना 12:24, 25)। स्वयं की भलाई चाहने वाला व्यक्ति, वह जो अपने जीवन से करता है, वही होता है जो इसे खो देता है। नकारात्मक रूप से, यदि उसे जीवन को प्राप्त करना है तो उसे "बुराई का साथ छोड़ना" होगा। सकारात्मक रूप से, उसे "भलाई के काम" करने होंगे।

जब कोई शान्ति का पीछा करता है जीवन एक प्रतिफल है। भजनकार और पतरस के लिये, शान्ति एक निष्क्रिय गुण नहीं था जो असंदेहास्पद मसीही में विद्यमान था। यह एक सक्रिय, यहाँ तक कि एक आक्रामक, शब्दों में खिंचाव, **वह मेल मिलाप को ढूँढ़े, और उसके यत्न में रहे**। LXX में यूनानी εἰρήνη *(इरेने)* इब्रानी שָׁלוֹם *(शालोम)* का अनुवाद है। इब्रानी भाषा से प्रभावित भजन संहिता 34:14 में यूनानी शब्द (MT में 34:15, LXX में 33:14) सम्पूर्णता, स्वास्थ्य, उद्धार और अपने संसार में समन्वय के सम्बन्ध का अभिप्राय रखता है। नए

नियम के लेखक यहूदी थे (लूका इसका अपवाद है)। उनके लिये "शान्ति," इब्रानी उपयोग के बाद, अभिवादन और विदाई के लिये एक शब्द था। शान्ति की सराहना करने का अभिप्राय किसी के जीवन की सुरक्षा की भलाई के लिये एक इच्छा को रखना और प्रार्थना करना था।

शान्ति का अर्थ युद्ध की अनुपस्थिति से कहीं अधिक है। यह उस शान्ति से भी बढ़कर है जो यह जानने से आता है कि किसी के पास परमेश्वर की उपस्थिति और शक्ति उसकी ओर है। शान्ति का हमेशा एक सामुदायिक पहलू होता है। यह दूसरों के साथ शान्ति है। पाप शान्ति से दूर ले जाता है। शान्ति और न्याय बहने हैं। जब एक व्यक्ति के पास दूसरे का दुरुपयोग करने की शक्ति होती है, जब समाज के नियमों और कानूनों को स्थापित किया जाता है ताकि अन्याय को कायम रखा जा सके, वहाँ शान्ति विफल हो जाती है। शान्ति की इच्छा मानवीय मामलों में, गरीबों का सही इलाज के लिये और अवसर के लिये ताकि समृद्धि में सभी भागी हो जिसका आनन्द समाज के द्वारा मनाया जा सके, जैसे न्याय के लिये मसीहियों की चिन्ता का एक प्रमाण है। इसका अर्थ इस प्रकार से है कि शान्ति कभी भी परमेश्वर के लोगों की बुद्धि से दूर से नहीं होती है। पतरस ने इस पत्री का समापन यह लिखते हुए किया कि, "तुम सब को शान्ति मिलती रहे" (5:14)। 2 पतरस के अन्त के करीब उसने सलाह दी "... यत्न करो कि तुम शान्ति से उसके सामने" (2 पतरस 3:14)। यूहन्ना ने अपनी तीसरी पत्री को इन शब्दों के साथ समाप्त किया, "तुझे शान्ति मिलती रहे। यहाँ के मित्र तुझे नमस्कार कहते हैं: वहाँ के मित्रों से नाम ले लेकर नमस्कार कह देना" (3 यूहन्ना 15)।

नमस्कार (1:2) और आशीष (5:14) शब्द का प्रयोग पतरस ने केवल यहाँ किया था। जानबूझकर उसने इस शब्द का प्रयोग किया था। वह यह स्पष्ट करना चाहता था कि "शान्ति" मसीही जीवन का आकस्मिक उत्पाद नहीं था। पौलुस पूर्ण सहमत था। "इसलिये हम उन बातों का प्रयत्न करें जिनसे मेल मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो" (रोमियों 14:19)। पौलुस विश्वासियों के बीच शान्ति को लेकर चिन्तित था, परन्तु पतरस को मसीहियों के गैर-विश्वास वाले पड़ोसियों के साथ शान्ति बनाकर रहने की चिन्ता थी। शान्ति अकस्मात कहीं से नहीं आती यीशु ने कहा, "धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं" (मत्ती 5:9)। आदर्श मसीहियों के लिये शान्ति के सकारात्मक उत्प्रेरक हैं, "मसीह में सभी पुरुषों और स्त्रियों के साथ मेल मिलाप के लिये काम करते हैं। क्योंकि यह उस गतिविधि के माध्यम से होता है कि वे सबसे अच्छा परमेश्वर की नकल करते हैं और इसे आगे ले जाते हैं जिसे परमेश्वर ने मसीह में आरम्भ किया और आत्मा में जारी है।"[10]

पतरस ने अपने पाठकों से एक सक्रिय रणनीति का पीछा करने का आग्रह किया जिसका परिणाम सबसे अधिक सम्भावना के साथ स्वयं और सभी मनुष्यों के बीच सद्भावना में होगा। सक्रिय रणनीति को जीभ पर नियन्त्रण और नैतिक रूप से संयमित जीवन की आवश्यकता होती है। नकारात्मक रूप से, मनुष्य को "जीभ को बुराई से रोके" रखने की आवश्यकता थी। सकारात्मक रूप से, यह

आवश्यक था कि मनुष्य "भलाई करे" कि "वह मेल मिलाप को ढूँढ़े, और उसके यत्न में रहे।" इसका प्रतिफल में वह परमेश्वर की आशीष के वारिस होगा (3:9)।

आयत 12. भजन संहिता 34 ने पतरस के पाठकों को आश्वस्त किया। उन्होंने न मसीह को गले लगा लिया था और उन सभी पुराने देवताओं को छोड़ दिया था, जिन्हें वे और उनके पूर्वज जानते थे और उनकी उपासना किया करते थे। क्यों बातें प्रतिकूल हो चुकी थीं? क्यों जगत के एकमात्र ईश्वर ने उनकी उचित देखभाल नहीं की? भजन संहिता कहता है, "परमेश्वर तुम्हें नहीं भुला है।" जब विश्वासयोग्य मनुष्य सही करता है, तो परमेश्वर इसे देखता है। परमेश्वर उनकी प्रार्थनाओं को सुनता है। इसके अतिरिक्त, **यहोवा बुराई करने वालों के विमुख रहता है**। जब यहोवा न्याय करने वापस आता है, जो धर्मी पर अत्याचार करते हैं, उनका लेखा लिया जाएगा। यहोवा बुराई करने वालों के विमुख रहता है। परमेश्वर अपने कार्य में सक्रिय है। हमें अपने विश्वास को छोड़ देना या खोना नहीं चाहिए। भजन संहिता में "यहोवा" परमेश्वर को संदर्भित करता है। पतरस के लिये, परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र के बीच में कोई भी रेखा नहीं खिंची गई है। उनकी एका में, "यहोवा बुराई करने वालों के विमुख रहता है।" व्यक्तिगत प्रतिशोध के बदले, मसीही विश्वास करते हैं कि परमेश्वर, अपने समय में, वर्तमान बुरे युग में न्याय को लाएगा।

अपने हृदय में मसीह को पवित्र करना (3:13-17)

[13]यदि तुम भलाई करने के लिये उत्तेजित रहो तो तुम्हारी बुराई करनेवाला फिर कौन है? [14]यदि तुम धर्म के कारण दुःख भी उठाओ, तो धन्य हो; पर लोगों के डराने से मत डरो, और न घबराओ, [15]पर मसीह को प्रभु जानकर अपने-अपने मन में पवित्र समझो। जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ; [16]और विवेक भी शुद्ध रखो, इसलिये कि जिन बातों के विषय में तुम्हारी बदनामी होती है उनके विषय में वे, जो मसीह में तुम्हारे अच्छे चाल-चलन का अपमान करते हैं, लज्जित हों। [17]क्योंकि यदि परमेश्वर की यही इच्छा हो कि तुम भलाई करने के कारण दुःख उठाओ, तो यह बुराई करने के कारण दुःख उठाने से उत्तम है।

3:9 का सुझाव है कि पतरस के पाठकों ने अपमान और बुराई का सामना किया था। उसने बुराई के चेहरे पर ईश्वरीय जीवन जीने के लिये उन्हें प्रोत्साहित करने के लिये भजन संहिता 34 का उल्लेख किया, परन्तु भजन संहिता अपने स्वयं में प्रश्न उठाता है। जो पतरस के पाठकों को यह पूछने के लिये आमंत्रित करता है कि, "यदि यहोवा हमारी ओर है, तो हम क्यों यह दुःख उठा रहे हैं? आप उन लोगों को आशीष देने की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं जो हमारा जीवन दुःखी कर रहे हैं?" आगे चलकर प्रेरित ने इन प्रश्नों पर ध्यान दिया।

आयत 13. दूसरी बार (देखें 1:6-9), पतरस ने स्पष्ट रूप से अपने पाठकों के दुःख को संबोधित किया। खण्ड (3:13-17) एक शब्दात्मक प्रश्न के साथ शुरू

होता है; जिसका उत्तर पर विचार किया गया। निश्चित ही, **यदि तुम भलाई करने के लिये उत्तेजित रहो तो तुम्हारी बुराई करनेवाला फिर कौन होगा?** फिर भी, इस विचार और कथनों के बीच कुछ तनाव चलते रहते हैं। यदि तुम भलाई करने के लिये उत्तेजित रहो तो तुम्हारी बुराई करनेवाला फिर कौन है? "दुःख रूपी अग्नि" उनमें भड़की है (4:12) और "मसीह के नाम के लिये" (4:14) उनकी निन्दा की गई, इसे अनिवार्य होना चाहिए, उत्तेजक नहीं होना चाहिए। पतरस उस मुद्दे पर बाद में बात करेगा, परन्तु इस क्षण, वह कुछ सिद्धान्तों का समाधान करना चाहता था, जो अपने पाठकों को खरा, ईश्वरीय जीवन में मार्गदर्शन करेंगे। वह उन्हें बाद में शान्ति और आश्वस्त करेगा, परन्तु अभी के लिये पतरस की चिन्ता थी कि सताव के परिस्थिति में ईश्वरीय चाल-चलन के लिये उन्हें मजबूत करना था।

सामान्य परिस्थितियों में दुनिया की सत्तारूढ़ शक्तियाँ लोगों को सच्चाई के बारे में बोलने, विश्वासहीनता को अस्वीकृत करने, अपने परिवार की जिम्मेदारी से पालन करने, और अन्य सब बातें जो "भलाई करने के लिये उत्तेजित रहने" में शामिल हैं, उन लोगों पर अत्याचार नहीं करते हैं। ये शब्द यशायाह 50:9 का स्मरण कराते हैं: देख, प्रभु यहोवा मेरी सहायता करता है; मुझे कौन दोषी ठहरा सकेगा? पतरस ने पहले ही कहा था कितनी बार अपने पाठकों को स्मरण कराया था कि "क्योंकि कुकर्मियों को दण्ड देने और सुकर्मियों की प्रशंसा के लिये" हाकिमों को भेजे जाते हैं (2:14)। अभी भी, सिद्धान्त जो प्रेरित लागू करना चाहता था वह इतना भी नहीं था कि मसीही कभी अन्याय नहीं सहेंगे, जैसा कि यह था कि मसीहियों को कभी भी बुरा व्यवहार नहीं करना चाहिए। बाद में वह (4:15) के बारे में कहता है: "तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण दुःख न पाए।" उसने पहले ही कहा था, "अन्यजातियों में तुम्हारा चाल चलन अच्छा हो" (2:12)। बुराई जो मसीही को सहना पड़ता है, निराशा में उसका लाभ उठाने का अवसर उन्हें कभी भी मिलना नहीं चाहिए, बुराई के बदले बुराई मत करो (3:9)।

आयत 14. पतरस ने पहले की आयत में प्रश्न को रखा था, इस आशय के साथ कि एक मसीही कभी भी भलाई करने के लिये हानि के मार्ग नहीं चुनता, जो स्पष्ट रूप से बढ़ा चढ़ा कर कही गई बात थी। प्रेरित ने वापस सोचा कि उसने अभी क्या कहा था, लेकिन उसने सही व्यवहार की अपेक्षा को पीछे नहीं छोड़ा। उसने व्याकरण उपकरण के साथ शुरूआत की जो कि नए नियम में दुर्लभ था। यदि तुम दुःख भी उठाओ, तो शब्दों के साथ उपयुक्त भाव का उपयोग करें। यह यूनानी लेखक के लिये उपलब्ध एक उपकरण था, जब वह सुझाव देना चाहता था कि शायद इसकी संभावना नहीं थी। जे. एन. डी. केली ने समझाया, "फिर भी, अगर आपकी भलाई की भक्ति आपको समस्या में ला सकता है ... ।"[11] स्पष्ट रूप से "भलाई के प्रति समर्पण" ने पतरस के कुछ पाठकों को समस्या में डाल दिया था। अज्ञानता, अन्धविश्वास, ईर्ष्या, या राजनीतिक दबाव कभी-कभी निर्दोष लोगों की दुःख उत्पन्न देते हैं। जबकि संसार में उन गुणों की कोई कमी

नहीं है, सच्चा व्यवहार मसीही सहयोगी है, जब वह उनका सामना करता है।

धार्मिकता पतरस की मुख्य चिन्ता थी। "यदि दुःख को अवश्य आना चाहिए," पतरस ने जोर देकर कहा, "यह सही काम करने के लिये हो और अन्य किसी कारण के लिए नहीं। यह बुराई करने के लिये कभी नहीं होगा।" जैसा कि हम पहले भी देख चुके हैं (2:24), 1 पतरस में "धार्मिकता" का अर्थ है "नैतिक रूप से सच्चा, ईश्वरीय चाल चलन।" पौलुस अर्थ अनुसार यह थोपी गई धार्मिकता नहीं है (उदाहरण के लिए, रोमियों 4:3-5)। नकारात्मकता से कहा गया, "धार्मिकता" का अर्थ है "सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो" (2:11)। जब "धर्म के कारण दुःख आता है," "पतरस ने अपने पाठकों को आश्वासन दिया," तुम धन्य हो। आशीष उनके लिये लज्जा की बात है जो अपमान करते हैं (3:16)।

यूनानी शब्द (μακάριος, *मकारिओस)* "धन्य" (आशीषित) अर्थ बताता है, 3:9 में इसका प्रयोग नहीं किया गया है। वहाँ के सन्दर्भ में आशीष जो बोले गए शब्द लिये होता; यहाँ पर धन्य एक गुण या अवस्था के लिये है जिसे मनुष्य अपने स्वयं में पाता है। यह पहाड़ी उपदेश का शब्द है, जिसमें आठवाँ कहता है, "धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है" (मत्ती 5:10)। विश्वासियों की आशीषों में क्या शामिल है? (1) यह एक आशीष है जो परमेश्वर के साथ दुःख में भागी होने की योग्यता से आता है जिसका प्रतिफल मानवजाति का छुटकारा है (4:13)। पौलुस के उल्लेखनीय शब्दों में, "अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता ... कलीसिया के लिये, अपने शरीर में पूरी किए देता हूँ।" (कुलुस्सियों 1:24)। (2) यह एक आशीष है जो निश्चितता से आता है कि परमेश्वर उन लोगों से प्रसन्न है जो विश्वास करते हैं और आज्ञा मानते हैं (1:22, 23)। (3) यह एक आशीष है जो प्रतिज्ञा में आशा को पाता है कि "और अपने विश्वास का प्रतिफल अर्थात् आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हो" (1:9)।

अन्तिम वाक्यांश, **पर लोगों के डराने से मत डरो, और न घबराओ**, कठिन है। यूनानी में अधिक शाब्दिक अनुवाद किया गया है, लिखता है, "उनके डर से मत डरो।" NRSV और NIV ने "डर न करें जो वे डराते हैं," जो NASB की तुलना में बहुत अलग विचार है। पतरस ने यशायाह 8:12 के अन्तिम शब्दों को अपनाया है। यशायाह नहीं चाहता था कि इस्राएल उन्हें डराने वाले राष्ट्रों से भयभीत हो, इस प्रकार NRSV और NIV का अनुवाद का समर्थन करना चाहिए। परन्तु, यह चेतावनी अन्धविश्वास और देवताओं से डरने की नहीं है जिनसे गैर विश्वासी डरते थे जो पतरस के विचार धारा से सही मेल नहीं खाता है। इस आयत का अनुवाद करने का एक और तरीका है, जो समान रूप से शाब्दिक है: "उनके डर से डरना मत," जिसे कहने का एक और तरीका है, "उन्हें डरना मत।" यह व्याख्या है जो NASB के अनुवाद के अनुसार समझा जाता है। संदर्भ NASB के शब्दों को समझने योग्य बनाता है। आशीषित मसीही आनन्द लेते हैं आश्वासन और शान्ति देते हैं ताकि समस्या आने पर वे **संकट में न पड़े**।

आयत 15. मसीही होने का तात्पर्य यह है कि इससे पहले कोई पूछे,

"बाइबल क्या शिक्षा देती है?" उसे यह पूछना चाहिए, "यीशु ने क्या शिक्षा दिया?" इससे पहले कि वह यह पूछे, "यीशु ने क्या शिक्षा दिया?" उसे यह पूछना चाहिए, "यीशु कौन था?" इससे पहले कि वह यह पूछे, "यीशु कौन था?" उसे यह पूछना चाहिए, "यीशु कौन है?" पतरस ने अंतिम प्रश्न पहले ही पूछा और उसका उत्तर भी दे दिया जब उसने कहा **पर मसीह को प्रभु जानकर अपने-अपने मन में पवित्र समझो**। मसीही विश्वास यीशु नासरी के व्यक्तित्व पर आधारित है। पतरस के लिए, यीशु नासरी और मसीह प्रभु एक ही थे। वह एक ऐतिहासिक शिक्षक थे जिसे पिलातुस ने क्रूस पर चढ़ा दिया था और वह प्रभु है जो परमेश्वर के दाहिने ओर बैठकर राज्य करता है। अब्राहम के समान (रोमियों 4:1-5), यीशु न केवल विश्वास का उदाहरण है; पर वह विश्वास का कर्ता है। वह प्रभु, मसीह और परमेश्वर है। "मसीह को प्रभु जानकर अपने-अपने मन में पवित्र समझो" का तात्पर्य उसे अपने भीतरी मनुष्यत्व में पवित्र ठहराना है; उसका आज्ञाकारी होना है और उससे प्रेम करना है। ईश्वरीय व्यवहार पतरस के मस्तिष्क में अभी भी सर्वोपरि है। यहाँ तक कि जब "धार्मिकता के कारण" उसके पाठकों पर दुःख आता है तो जिनके मन में भय उत्पन्न होता है यह उनको न डराए, बल्कि यह तो "मसीह ही प्रभु" है के प्रति नए सिरे से समर्पण का आह्वान है।

दुःख का प्रत्युत्तर दो स्तर में होता है। सर्वप्रथम, दुःख उठाने वाले को यह निर्णय करना है कि मसीह के प्रति उसका क्या प्रत्युत्तर होगा। पतरस ने कहा कि दुःख उठाने वाले को अपने मन में मसीह को पवित्र जानना था। दुःख उठाने वाला यह तभी कर सकता है जब वह धार्मिकता से जीने के लिए प्रण करता है। द्वितीय, दुःख उठाने वाले को यह भी निर्णय करना चाहिए कि उसके सताने वालों के प्रति उसका क्या प्रत्युत्तर है। नकारात्मक रूप से उसे "बुराई के बदले बुराई या अपमान के बदले अपमान" नहीं लौटाना चाहिए (3:9), न ही उसको भयभीत होना चाहिए, लेकिन इसके साथ ही इसके प्रति सकारात्मक प्रत्युत्तर होना चाहिए। **जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ**। इसका आशय यह है कि जब सताने वाला, मसीहियों के समर्पण और आनंद, जब वे अकारण दुःख उठाते हैं, देखता है तो यह उसके मन में जिज्ञासा उत्पन्न करेगा। इससे यह संभावना हो जाती है कि वे मसीहियों को उनके प्रभु जिसकी वे सेवा करते हैं, जिस संगति में वे सहभागी होते हैं और जिस आशा की वे प्रतीक्षा करते हैं, के बारे में पूछताछ करे।

जब कोई भी एक विश्वासी को उसके **आशा के विषय में कुछ पूछे**, तो उसको इस बात का उत्तर देने के लिए तैयार रहना चाहिए कि वह क्या विश्वासी करता है या किस पर विश्वासी करता है, क्यों विश्वास करता है और वह वैसा क्यों जीता है। "उत्तर/प्रत्युत्तर" देना न्यायालय का औपचारिक मामला नहीं है; बल्कि यह "उन सब को उत्तर देना है जो आपसे पूछे।" पतरस ने भी पौलुस के भांति "उत्तर/प्रत्युत्तर" (ἀπολογία, *अपोलोगिया*) को अनौपचारिक रूप से प्रयोग

किया है, उदाहरण, "जो मुझे जाँचते हैं, उन के लिये यही मेरा उत्तर है" (1 कुरिंथियों 9:3)। यद्यपि यह शब्द न्यायालय की कार्यवाही की ओर संकेत करता है, लेकिन इस परिस्थिति में "उत्तर/प्रत्युत्तर" का तात्पर्य विश्लेषण करना है। "उत्तर देना" केवल एक यूनानी शब्द λόγος *(लोगोस)*, का अनुवाद है जो तर्क के लिए प्रयोग किया जाता है। पतरस ने अनुमान लगाया कि मसीहियों की "आशा" का तर्कसंगत व्याख्यान, किसी को विवश करेगा तो दूसरों को शांत करेगा। यहाँ स्मरण दिलाया गया है कि निर्मल आत्मिक दूध जिसकी मसीही लोग लालसा करते हैं वह तर्कसंगत दूध है (2:2)।

प्रेरित ने न केवल मसीहियों के "उत्तर/प्रत्युत्तर" से संबंधित संबंधों को, बल्कि उसने उनके व्यवहारों को भी संबोधित किया है। जब कोई उस पर दोषारोपण करते हैं और सताते हैं तब एक मसीही को उन्हें नम्रता और भय के साथ उत्तर देना है। φόβος *(फोबोस)* का अनुवाद "नम्रता" है जबकि बहुधा इसका अनुवाद "भय" किया गया है। NIV में इसका अनुवाद "नम्रता और आदर" किया गया है। इसी तरह, पौलुस ने विश्वासियों से निवेदन किया कि वे "प्रेम में सच्चाई से चलते रहें" (इफिसियों 4:15)। पौलुस का उनके प्रति जो "नाना प्रकार के ठग-विद्या और भ्रम की युक्तियों" से उछाले जाते थे, के प्रति विश्वासियों की व्यवहार की चिंता थी (इफिसियों 4:14), और पतरस को विश्वासी, अविश्वासियों को अपने से अलग और परमेश्वर के प्रति वे सम्मान जनक तरीके से उन्हें संबोधित करने, की चिंता थी। दोनों व्यक्तियों ने विरोधाभास विचार रखने वालों से संयम, नम्रता, और शुभ कामनाएं बनाए रखने का निवेदन किया। केवल सच्चाई बोलना या "उत्तर/प्रत्युत्तर" देना ही पर्याप्त नहीं है। जिस तरीके से बातचीत की जाती है वह भी बहुत महत्वपूर्ण है।

आयत 16. "नम्रता और आदर" को NASB, क्रियाविशेषण वाक्यांश में परिवर्तित कर "बचाव करना" अनुवाद करता है, अर्थात एक मसीही को अपने विश्वास का विश्लेषण नम्रता और आदरपूर्वक करना है। NASB, NRSV, NIV, REB, और अन्य अनुवाद भी इस शब्द का इसी प्रकार अनुवाद करते हैं। फिर भी, वाक्यांश अलग-अलग रूप में लिखा जा सकता है। संभवतः पतरस अपने पाठकों को यह बताना चाहता था कि उन्हें अपने "आशा" का "बचाव करना या उत्तर/प्रत्युत्तर देना" मसीह में नम्रता और आदरपूर्वक करना है। यह संभव है, लेकिन यह ऐसा नहीं होता है। प्रेरित अपने पाठकों को अपने सताने वालों के साथ ईश्वरीय स्वभाव में होकर बर्ताव करने के लिए उत्साहित करता है। बुराई के बदले बुरा करने के बजाय, उन्हें अपने सताने वालों को आशीष देना था (3:9)। इस वाक्यांश को पतरस की सलाह, बदनाम के बदले आशीष के विस्तार के रूप में देखा जाना चाहिए अर्थात उसके पाठकों को अपने "आशा" का जो उनके पास है, का विश्लेषण नम्रता और आदर के साथ, इस आशा से करना चाहिए कि जो उनको सताते हैं उनके प्रति उनके मन में कोई बुरे विचार नहीं है।

पतरस ने विवेक शब्द (συνείδησις, *सुनैडेसिस)* का प्रयोग तीन बार किया है (2:19; 3:16, 21)। यह पौलुस के पत्रियों में एक सामान्य शब्द है।[12] पाश्चात्य

संस्कृति की चरम व्यक्ति वाद विचारधारा ने "विवेक" को व्यक्तिगत रूप दे दिया है। यह एक भीतरी शब्द नाद है जो किसी व्यक्ति विशेष के व्यवहारों को दोषी ठहराता है या फिर मान्यता प्रदान करता है। यूनानी शब्द का अर्थ, बहु प्रचलित पाश्चात्य विचारधारा के प्रयोग से मिलता जुलता है जिसमें "विवेक" को एक व्यक्तिगत चेतन माना गया है। अंतर केवल इतना है कि प्राचीन लोगों ने इसे दूसरों के साथ व्यक्तिगत संबंध में व्यक्तिगत चेतन समझा। यह किसी की अपनी समझ है कि दूसरे उसको मान्यता देते हैं या नहीं। अच्छा "विवेक" का तात्पर्य यह है कि क्या किसी ने अपने आपको ऐसा बनाया कि उसके व्यवहार को परमेश्वर व उसके समकालीन लोग मान्यता दें। "विवेक" का अपना नैतिक क्षेत्र होता है और यह परमेश्वर व अन्य समुदायों के मध्य अस्तित्व में आ जाता है। व्यक्ति विशेष में नैतिक चेतन के रूप में "विवेक" की अवधारणा जो *ex nihilo*, एक्स निहिलो ("शून्य में से") है, वह पतरस के लिए अज्ञात था। प्रेरित यह नहीं कह रहा है कि विश्वासी के पास दोषारोपण करने वाले को शर्मिंदा करने के लिए "अच्छा विवेक" का होना आवश्यक नहीं है, जैसे वह यह पुष्टि करता है कि "अच्छा विवेक" उनके शर्मिंदा का कारण ठहरा।[13]

जब एक विश्वासी को उसके विश्वास का कारण बताने के लिए या प्रत्युत्तर देने के लिए कहा जाता है तो उसका "अच्छा विवेक" उसे सहारा और साहस प्रदान करता है। वह जानता है कि उसके विरूद्ध दोषारोपण केवल एक कलंक लगाना है। पहला पतरस 2:12 में इसकी कई मौखिक समानताएं पाई जाती हैं। अन्य जाति लोग मसीहियों पर किस प्रकार का कलंक लगाते हैं इसके बारे में प्रेरित ने स्पष्ट नहीं किया है, लेकिन इसके बारे में आकलन करना इतना कठिन नहीं होगा। ज्यों-ज्यों सदियाँ गुजरती गई, प्रभु के मेज की मांस और लहू ने मसीहियों पर नर-भक्षी होने का आरोप लगाया। मसीहियों पर उनके आराधना के समय यौन संबंध बनाने का भी आरोप लगाया गया। इससे भी दयनीय स्थिति यह थी कि उन पर नास्तिक होने का आरोप लगा क्योंकि वे उन देवी देवताओं को नहीं मानते थे जिनकी अन्य लोग उपासना किया करते थे। उन पर मानवता विरोधी होने का भी आरोप लगा क्योंकि वे सार्वजनिक समारोह, जहाँ देवी देवताओं की उपासना व जहाँ उनको बलि चढ़ाई थी, में भाग नहीं लेते थे। पतरस द्वारा उसके पाठकों का अपमान व निंदा का संदर्भ यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि अभी तक उन पर सताव मौखिक था, वे बंदीगृह में नहीं डाले गए थे और न ही उनकी हत्या की गई थी।

इस बात की आशा की जाती है कि मसीहियों के "अच्छे व्यवहार" इतना स्पष्ट हो कि निंदा करने वाले की कोई विश्वसनीयता ही न रह जाए। जब उनका "अच्छा विवेक" होगा तो इसका परिणाम यह होगा कि जो **मसीह में तुम्हारे अच्छे चाल-चलन का अपमान करते हैं, वे लज्जित होंगे**। आधुनिक पाश्चात्य समाज की तुलना में प्राचीन यूनानी-रोमी साम्राज्य के लोगों में "विवेक" के समान "शर्म" की कठोर सामाजिक अभिव्यक्ति पाई जाती थी। "शर्म" आंतरिक पश्चाताप और स्व-अभियोग का लक्षण नहीं था। बल्कि, यह तो उस कार्य का

परिणाम था जिसकी उसके समकालीन लोगों के द्वारा निंदा की जाती थी। "अच्छा विवेक" ही "शर्म" से छुटकारा दे सकता था। ऐसे स्थिति में, एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के आँखों में बिना झिझक के देख कर बात कर सकता था। जितना अधिक अविश्वासी, मसीहियों के "मसीह में उनके अच्छे व्यवहार" देखेंगे तो वे उतने ही अधिक, जब उनके समकालीन लोग उनके कार्यों का अवलोकन करेंगे, अपने कुकृत्य के प्रति सतर्क हो जाएंगे और शर्मिंदा होंगे। इस प्रकार विश्वासियों को अपने विरोधियों को शांत करना था। जब कोई उनके अच्छे नाम की निंदा करते हैं और मसीही लोग उसका बदला देते हैं तो यह यीशु ने जो आदर्श हमारे लिए छोड़ा है उसके विपरीत है (2:23)।

आयत 17. पतरस अपने पाठकों से उनके अच्छे व्यवहार को न त्यागने व बेशर्म भरी जीवन जीने की अपेक्षा नहीं कर रहा था। नए मत के लिए बिना पक्षपात की सुनवाई अत्यंत कठिन था। यदि समाज में कुछ भी गलत हो जाता है तो इसकी जिम्मेदारी नए मत के मानने वालों पर दोष लगा दिया जाता है। इससे मसीही लोग वंचित नहीं थे। पतरस को इस बात की चिंता थी कि वे अविश्वासियों को वास्तविक दुर्व्यवहार के लिए अपने आपको सताने का अवसर उन्हें प्रदान न करे। उसने कहा कि **यदि परमेश्वर की यही इच्छा हो,** दुःख आएगा; लेकिन वह यह नहीं चाहता था कि निंदा में थोड़ी सी भी सच्चाई हो। बेस्ट ने टिप्पणी की, "सताने वाले अक्सर उनसे सुगंधित होते हैं जिनको वे सताते हैं और उनके अच्छे व्यवहार से नहीं जीते जाते हैं।"[14] यदि मामला ऐसा ही है तो पतरस ने आग्रह किया, तुम्हारा "अच्छा विवेक" यह साक्षी दे कि तुम भलाई करने के कारण दुःख उठाओ, तो यह बुराई करने के कारण दुःख उठाने से उत्तम है।

जब यह आयत विश्वासियों को "भलाई करने के कारण दुःख उठाओ, तो यह बुराई करने के कारण दुःख उठाने से उत्तम है," के लिए आह्वान देता है तो कम से कम इसके दो संभावित अर्थ निकाला जा सकता है। इसका तात्पर्य यह हो सकता है कि जब मसीहियों के विरुद्ध अपराध होने के कारण वे उस पर प्रतिक्रिया जताते हैं तो यह अविश्वासियों को उन्हें और अधिक सताने का अवसर प्रदान करता है (देखें 2:20; 3:9)। बुराई के बदले बुराई करने से केवल गलतियाँ ही होती है। यदि ऐसी बात है तो बिना प्रतिक्रिया जताये बुराई के बदले दुःख उठाने में ही भलाई है। 2:12 में प्रेरित इसे दूसरे शब्दों में बताने का प्रयास कर रहा : "अन्यजातियों में तुम्हारा चाल-चलन भला हो।"

दूसरी संभावना यह है कि पतरस अपने पाठकों को यह चेतावनी देता है कि आने वाले संसार में गलत कार्य के बदले दुःख उठाने से इस संसार में भलाई के बदले दुःख उठाने में ही भला है। दूसरा अनुवाद आकर्षक जान पड़ता है क्योंकि जब पतरस ने इस पत्री को लिखा था तो उस समय प्रभु का द्वितीय आगमन उसके मन से अलग नहीं था।[15] इन दोनों अनुवादों के मध्य विभेद करना अत्यंत कठिन है परंतु पहला वाला अनुवाद अधिक संभावित जान पड़ता है। प्रेरित की यह इच्छा थी कि उसके पाठकों का जीवन उलाहना से ऊपर हो और अन्य जातियों के सम्मुख भक्तिपूर्ण जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करे।

एक मसीही को मनुष्यों की सराहना पाने के उद्देश्य से उसके धर्म के कार्य (देखें मत्ती 6:1) और सबके सामने उसका व्यवहार खरा होने, के मध्य सावधानी पूर्वक संतुलन बनाना चाहिए। यह उचित होगा कि एक विश्वासी को अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान रखना चाहिए। जिस प्रकार एक बुद्धिमान यहूदी ने इसे इस प्रकार लिखा : "अपने नाम का ध्यान रखें; यह आपको सोने के हजारों ढेरों से भी अधिक समय तक जीवित रखेगा।"[16]

हमारे पापों के लिए मसीह की मृत्यु (3:18-22)

[18]इसलिये कि मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मी ने, पापों के कारण एक बार दुःख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुँचाए; वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया। [19]उसी में उसने जाकर कैदी आत्माओं को भी प्रचार किया, [20]जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा न मानी, जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज बन रहा था, जिसमें बैठकर थोड़े लोग अर्थात् आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए। [21]उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; इससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है। [22]वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया; और स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी उसके अधीन किए गए हैं।

अधर्मी मानवजाति के पापों के लिए यीशु का अत्यंत दुःख उठाने का सीधा वक्तव्य देकर, पतरस ने नए नियम के सबसे कठिन अनुच्छेदों में से एक अनुच्छेद को परिचित किया है। फिर भी उसने जो सबसे उत्तम बात कही है उसे हमें समझना है, उसके शब्दों का समस्त प्रभाव स्पष्ट है। जब विश्वासियों का बपतिस्मा हुआ तो वे पापों से बचाए गए हैं। जब वे उद्धार पा लेते हैं तो जो परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठकर राज्य करता है, वे उसके आशीषों के सहभागी हो जाते हैं। वही मसीह जो अपने लोगों का उद्धार करने के लिए क्रूस पर मरा, अब वह सारे आसमान की और पृथ्वी की शक्तियों पर राज्य करता है। इस कारण, जो अभी दुःख उठाते हैं वे आनंद कर सकते हैं।

आयत 18. यह ऐसा है मानो पतरस, **मसीह** के दुःख के बिना विश्वासियों के दुःखों के बारे में सोच नहीं सकता है और यह कि वह बिना यह स्मरण किए मसीह के दुःखों के बारे में नहीं सोच सकता था कि वह **हमारे पापों के लिए मरा**। 2:19, 20 में सेवकों द्वारा दुःख उठाना, ऐसे ही विचारों की कड़ी की ओर ले जाता है। ऐसा लगता है कि यीशु का पूरा जीवन दुःखों से चरितार्थ है परंतु मानव जाति के पापों के कारण उसके दुःखों ने ही पतरस को आकर्षित किया होगा। कि मानव जाति के पापों के लिए यीशु ने दर्दनाक मृत्यु सहा जो नए नियम का मुख्य विषय वस्तु है। पौलुस ने स्पष्ट रूप से इसको इस प्रकार

अभिव्यक्त किया है : "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं" (2 कुरिंथियों 5:21)।

पतरस ने 2:21-25 में मसीह के उदाहरण पर जोर दिया है, परंतु इस आयत में उसके उदाहरण में कोई विवाद नहीं है। पतरस ने यीशु के शिष्यों से अधर्मियों के लिये धर्मी ने, पापों के कारण एक बार दुःख उठा कर प्रभु के मरने का उदाहरण का अनुकरण करने की अपेक्षा नहीं की थी। यीशु के शिष्यों को कैसा भी दुःख क्यों न उठाना पड़े, उन्हें यीशु के समान पाप उठाने की आवश्यकता नहीं थी (2:24), **न ही वे आत्मा के भाव से जिलाये जाते**। इस आयत में पतरस का उद्देश्य यह नहीं था कि वह अपने पाठकों को स्मरण दिलाए कि यीशु ने उन्हें यह दिखाया कि दुःख कैसे उठाना चाहिए ताकि वह उन्हें सिखाए कि हमें **परमेश्वर के पास पहुँचाने** के लिए ही यीशु मरा। इब्रानियों की पत्री के लेखक के लिए यीशु सबके लिए एक बार मरा, विषय बार-बार दोहराया गया है (इब्रानियों 7:27; 9:12, 26, 28; 10:10, 14)।

पापों के लिए मसीह की मृत्यु में विशिष्टता और परिपूर्णता है। यह इस तथ्य का आशय भी है कि "मसीह सबके पापों के लिए एक बार और हमेशा के लिए मरा।" परमेश्वर के साथ मेल मिलाप करने के लिए एक पापी को मानव जाति के पापों के लिए अतिरिक्त दुःख उठाने की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए क्रूस ही पर्याप्त है।[17] इब्रानियों के पत्री के लेखक ने तर्क दिया कि मसीह, हारून के याजक की विधि के समान हर वर्ष बलिदान नहीं चढ़ाता है, बल्कि उसने अपने आपको "बहुतों के पापों का भार उठाने के लिए एक बार बलिदान कर दिया" (इब्रानियों 9:24-28)। इब्रानियों की पत्री में यीशु याजक और बलिदान दोनों है। पहला पतरस में वह एक बलिदान, एक निर्दोष भेंट, "अधर्मियों के लिए धर्मी" है।

पतरस के मूल पाठक और उसके समकालीन पाठक "अधर्मी" श्रेणी के अंतर्गत आते हैं। पौलुस और पतरस दोनों ने एक ही बात कहा : "सब ने पाप किया है" (रोमियों 3:23)। यह उसके निर्दोषता की दशा में दुःख उठाने के कारण "हमें परमेश्वर के पास पहुँचाने" में सक्षम है। पतरस ने इसका व्याख्यान 2:24, 25 में किया है लेकिन यहाँ वह थोड़ा और आगे बढ़ गया है। क्रूस पर मसीह का दुःख और मृत्यु कहानी का अंत नहीं है। क्रूस पराजय नहीं है। यद्यपि, वह **शरीर के भाव से घात किया गया**, लेकिन परमेश्वर ने क्रूस को विजय में बदल डाला। वह "आत्मा के भाव से जिलाया गया।" हम पतरस से जो कहने की अपेक्षा करते हैं वह दूसरे वक्तव्य से स्पष्ट है। न केवल यीशु "शरीर के भाव से घात किया गया," परंतु वह शरीर के भाव से जिलाया भी गया। प्रभु ने इस बात को तब स्पष्ट किया जब उसने थोमा को अपने कीलों की छेदों पर अंगुली डालने को कहा (यूहन्ना 20:25, 27)। पतरस ने यीशु के शारीरिक पुनरुत्थान पर कोई भी टिप्पणी नहीं की है। उसका वक्तव्य अलग था। "शरीर के भाव" से यीशु उन लोगों के हाथों मरा जिन्होंने उसको क्रूस पर चढ़ाया था। "आत्मा के भाव" से उसको जीवित रहने के लिए जिलाया गया था।

इन शब्दों के साथ ही पतरस ने नए नियम के सबसे कठिन अनुच्छेद और निश्चय ही इस पत्री का सबसे कठिन अनुच्छेद को यहाँ परिचित किया है। 1930 में जे. ए. मेक्कुलोक और अन्य विद्वानों ने इस अनुच्छेद का आदि कलीसिया की परंपरागत मान्यता के अनुसार कि यीशु अपने क्रूसीकरण के पश्चात् मृतकों के संसार में गया, का विश्लेषण किया।[18] मेक्कुलोक के प्रकाशन के पश्चात् विद्वानों ने इस अनुच्छेद का अध्ययन करने में पर्याप्त समय व्यतीत किया है। पतरस के इन शब्दों पर हजारों व्याख्याएं प्रस्तुत किया गया है। इसमें बड़ी जटिल मामले शामिल है। इन सब का निस्तरण करना अत्यंत कठिन होगा। यहाँ यह बताना आवश्यक है कि NASB ने "आत्मा" "spirit" को अंग्रेजी के बड़े अक्षर में नहीं छापा है। अनुवादकों ने सदैव अंग्रेजी अनुवाद में आत्मा शब्द के लिए जहाँ इसका आशय पवित्र आत्मा से है, वहाँ उन्होंने इसे अंग्रेजी के बड़े अक्षर में छापा है। लेकिन NASB के विपरीत NIV इसको अंग्रेजी के बड़े अक्षर ("Spirit") छापता है। यूनानी भाषा में "spirit" शब्द किसी भी शब्द रूप में बड़े अक्षर में नहीं लिखा जाता है। केवल संदर्भ ही इस बात का निर्धारण करता है कि क्या यह पवित्र आत्मा को संबोधित कर रहा है या फिर साधारण आत्मा को संबोधित कर रहा है। दोनों NASB और NIV "spirit" या "Spirit" जिसका वे प्रयोग कर रहे हैं, का व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

आयत 19. यह आयत तुरंत प्रश्न उठाता है। इस वाक्यांश का सापेक्ष सर्वनाम, **उसी में** अस्पष्ट है। पूर्ववर्ती आयत में इस सर्वनाम के लिए प्रयुक्त निकटतम शब्द "spirit," "आत्मा" है, जिसका NIV में पवित्र आत्मा अनुवाद किया गया है। जब NIV इस सर्वनाम का "उसी में" के बजाय "जिसमें" अनुवाद करता है तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। यदि NIV अनुवाद का अनुकरण किया जाय तो पढ़ने वाला यह समझेगा कि यीशु ने पवित्र आत्मा में भरकर **जाकर प्रचार किया** अर्थात पवित्र आत्मा ने जो सामर्थ्य उसको दी थी उसी सामर्थ्य के द्वारा उसने प्रचार किया। क्या NIV अनुवाद ठीक है? यूनानी पूर्वसर्ग ἐν *(एन)* का संभावित अनुवाद "द्वारा" हो सकता है और इस आयत का व्याकरण, पूर्ववर्ती आयत में यूनानी सर्वनाम इसे "आत्मा" संबोधित करने की अनुमति देता है। यदि मामला यही है तो इसे स्वीकार किया जा सकता है और अस्वीकार्य है तो इसका अनुवाद, "जिसके द्वारा" हो सकता है। प्रश्न यह है कि क्या पतरस इसी बात को बताना चाहता था? NIV ने अँग्रेजी पाठकों के लिए संभावित अनुवाद प्रस्तुत किया है लेकिन इसमें प्रश्न चिह्न लगाया जा सकता है कि क्या इस अनुवाद ने इस आयत का उचित व्याख्या प्रस्तुत किया है।

सर्वनाम, "जिसका" या "जिसको" पवित्र आत्मा को संबोधित कर सकता है लेकिन यह अनिवार्य नहीं है। आधुनिक अनुवाद, संभवतः इस तथ्य की ओर अधिक प्रतिक्रिया व्यक्त न करता हो लेकिन यूनानी वाक्यांश ἐν ᾧ *(उसी में)* 1 पतरस में चार बार प्रयोग हुआ है (1:6; 2:12; 3:16; 4:4)। NASB इसको "जिसमें" या "इसमें" अनुवाद करता है। दूसरे स्थानों में यह सर्वनाम पूर्ववर्ती विचारों पर संदर्भ पर आधारित है। इस प्रकार जब पतरस ने 1:6 में लिखा कि

"इस कारण तुम मगन होते हो," तो यहाँ यह सर्वनाम "इस कारण," 1:4, 5 में वर्णित सब प्रकार की परिस्थितियों में आनंद करने की ओर संकेत करता है न कि कुछ विशेष परिस्थितियों में। उसी तरह, हमारे सम्मुख जो आयत है उसमें "in which" "उसी में" केवल "spirit" "आत्मा" की ओर ही संकेत नहीं करता है बल्कि पूर्ववर्ती आयत में मसीह का विवरण कि वह मारा गया और जिलाया गया, की ओर संकेत करता है। संभवतः पतरस यह कह रहा था कि उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान से संबंधित घटनाओं के दौरान यीशु ने "जाकर प्रचार किया।" यदि ऐसी बात है तो यह विकल्प हो सकता है: (1) पतरस यह कह रहा होगा कि पवित्र आत्मा की सहायता से यीशु गया होगा, या (2) किसी आत्मिक अवस्था में यीशु गया होगा, या (3) फिर उसके मृत्यु और पुनरुत्थान के अंतराल, वह गया होगा। पहला और दूसरा विकल्प के बीच पूर्ववर्ती सर्वनाम का अर्थ "आत्मा" "spirit" ही होगा। पहली घटना में यह पवित्र आत्मा है (जैसे NIV में उल्लेखित किया गया है); दूसरी घटना में सामान्य रूप से आत्मा का अर्थ "आत्मिक अवस्था" हो सकता है (जैसे यह NASB में उल्लेखित है)। "उसी में" ("which") का पूर्ववर्ती अर्थ "आत्मा" ("Spirit") या "आत्मा" ("spirit") या फिर यह मसीह की अवस्था हो सकती है जिसमें वह घात किया गया या फिर जिलाया गया। कोई भी इन व्याख्याओं में से जो भी अनुकरण करे, उसको शेष अनुच्छेदों को समझने के लिए कठिन प्रयास करना होगा।[19] इस व्याख्या पर अपना मत स्पष्ट करने से पहले हम इन आयतों में उठाए गए संभावित अन्य मामलों का अध्ययन करने तक रुक जाएंगे।

प्रश्न जारी है। "वह गया और उसने प्रचार किया" को शाब्दिक या आलंकारिक रूप में समझा जा सकता है, दूसरे शब्दों में यीशु व्यक्तिगत रूप से वहाँ गया होगा या फिर वह आत्मा में गया या फिर प्रतिनिधि होकर गया होगा। फिर भी, जब पतरस ने कहा कि यीशु ने **कैदी आत्माओं को प्रचार किया**, तो "कैदी आत्माओं" का प्रतीकात्मक व्याख्या की आवश्यकता है। वास्तविक कैदखाना और जिसमें आत्माओं को चौकीदारों ने वास्तविक रूप से कैद कर रखा है, कल्पना से परे है। आत्माएं एक प्रकार से कैद में थीं लेकिन वे वैसे कैदी नहीं थीं जैसा मनुष्य सोचता है। ध्यान दें कि NASB में "अभी" ("now") तिरछे अक्षरों में लिखा है जिसका तात्पर्य यह है कि यह शब्द यूनानी भाषा में नहीं है। जब NASB अपने व्याख्या में "अभी" ("now") जोड़ता है तो इसका सुझाव यह दिया जाता है कि जब यीशु ने उनको प्रचार किया तो आत्माएं अभी कैद में नहीं है लेकिन जब पतरस ने यह पत्री लिखी तब वे कैद में थीं। पाठकों को संदर्भ पर आधारित इस अनुच्छेद के अर्थ का विश्लेषण करना चाहिए कि क्या NASB ने "अभी" ("now") शब्द जोड़कर अनुच्छेद के साथ न्याय किया है कि नहीं।

यदि उन "आत्माओं" जिन्हें यीशु ने प्रचार किया वास्तविक रूप से कैद में नहीं थे तो फिर वे कहाँ थे? "कैद में" का क्या अर्थ है? इन प्रश्नों का उत्तर इस बात पर निर्भर करेगा कि वे आत्माएं कौन थे जिनको यीशु ने प्रचार किया। 3:20 के अनुसार ये आत्माएं वे हैं जो नूह के दिनों में आज्ञाकारी नहीं रहे। कुछ

विद्वानों का मानना है कि यह संदर्भ उत्पत्ति 6:1-4 में वर्णित उन दुष्ट स्वर्गदूतों, या "परमेश्वर के संतानों" के बारे में है जो जल प्रलय से पहले रहते थे। यह सत्य है कि उत्पत्ति 6:1-4 में वर्णित "परमेश्वर के संतानों" (जो भी वे रहे हों) जिन्होंने "मनुष्य की पुत्रियों" को अपनी पत्नियाँ बनाया, जो समकालीन विद्वानों में अधिक चर्चा का विषय बना, में पतरस का रुचि नहीं था। पतरस को इस बात की चिंता थी कि परमेश्वर उसके समय के लोगों का न्याय करने वाला था। स्वर्गदूतों का न्याय में उसकी कोई रुचि नहीं थी। नूह के दिनों के आज्ञा न मानने वाले लोगों के समान, पतरस के दिनों के आज्ञा न मानने वाले लोगों ने परमेश्वर के क्रोध को भड़का दिया था। "और यहोवा ने देखा, कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है" (उत्पत्ति 6:5)। नूह के दिनों में जिन "आत्माओं" ने परमेश्वर के आज्ञा को नहीं माना वे उस पीढ़ी के दुष्ट लोग थे।

लोगों को "प्राणी" करके संबोधित करना सामान्य था, परंतु प्रेरित उन लोगों को कैसे संबोधित करता जो वर्षों पूर्व मर चुके थे? सामान्य संसार के रीति के अनुसार वे जीवित लोग नहीं थे अर्थात वे देह में जीवित नहीं थे। प्रेरित ने जीवित लोगों को "प्राणी" (ψυχαί, *सूखाई,* 3:20) करके संबोधित किया; जो लोग मर चुके थे वे "आत्मा" थे। पतरस द्वारा "आत्मा" का संबोधन ठीक वैसा ही है जैसे इब्रानियों 12:9 में "शारीरिक पिता" को "आत्माओं के पिता" से श्रेष्ठ ठहराया गया है। पतरस के समान, इब्रानियों के पत्री के लेखक ने भी उन लोगों के लिए "आत्मा" शब्द का प्रयोग किया है जो अभी शरीर में जीवित नहीं हैं। जब पतरस ने "कैदी आत्मा" कहा तो इससे उसका तात्पर्य नूह के दिनों के आज्ञा न मानने वाले लोगों से था जो अभी शरीर में जीवित तो नहीं हैं परंतु वे मृत्यु के दासता में थे। "आत्माएं" नूह के दिनों के आज्ञा न मानने वाले लोग थे। जब पतरस ने यह पत्री लिखी तब वे अधोलोक में थे। यही उनका कैद था। क्योंकि वे भविष्यवक्ता और उनके भाषा शैली जानते थे इसलिए कैद के समान अधोलोक का विचार उन लोगों के लिए अनोखी बात नहीं थी। उदाहरण के लिए यहेजकेल ने मिस्र के उन प्रतापी लोगों के बारे में वर्णन किया है जो अधोलोक तक पहुँचाए गए थे (यहेजकेल 32:18-32), जो एक कैद के समान संसार की झलक प्रस्तुत करती है। पतरस के लिए कैद, यहेजकेल में वर्णित अधोलोक के समतुल्य है।

संक्षिप्त में, यीशु अधोलोक गया, विशेषकर उनके पास जो नूह के दिनों में आज्ञाकारी नहीं थे और उसने "प्रचार किया।" यीशु ने एक संदेश सुनाया। κηρύσσω *(केरूस्सो)* शब्द संदेश सुनाने के लिए सामान्य शब्द है। 4:6 में पतरस ने सुसमाचार सुनाने के लिए εὐαγγελίζω *(यूवांगेलिद्जो)* शब्द का प्रयोग किया है जिसका अर्थ सुसमाचार सुनाना है लेकिन यहाँ इसका अर्थ सुसमाचार सुनाना नहीं है। यीशु ने मृतकों को क्या संदेश दिया? आखिर वह मृतकों को कुछ भी क्यों सुनाना चाहता था? इन प्रश्नों का समाधान ढूँढने के लिए हमें इस आयत में पहले उठाए गए समस्याओं पर वापस जाना होगा। इस आयत में सर्वनाम का पूर्व पद क्या है? "उसी में" ("in which") का क्या अर्थ है?

यूनानी और NASB दोनों में 3:18 का अंतिम शब्द "आत्मा" है। जब यीशु

शरीर में था तभी वह मारा गया; और आत्मा में वह जिलाया गया। पतरस ने सीधे तौर पर यह क्यों नहीं कहा कि यीशु जिलाया गया? उसने ऐसा क्यों नहीं कहा "आत्मा में जिलाया गया"? संभवत 2:5 इसको समझने लिए हमारी सहायता कर सकता है जहाँ प्रेरित ने "आत्मिक घर" और "आत्मिक बलिदानों" के बारे में वर्णन किया है। वहाँ संभवतः वह यह कहना चाहता है कि घर और बलिदान भौतिक नहीं है। वे निस्संदेह "आत्मिक" हैं अर्थात वे परमेश्वर के लिए और परमेश्वर की स्वीकृति के लिए है; लेकिन वे सभी आत्मिक है। जैसे "आत्मा" अभौतिक है वैसे ही आत्मिक का तात्पर्य शाब्दिक नहीं है। पतरस के दृष्टिकोण से 2:5 में "आत्मिक" शब्द का प्रयोग, यीशु का मृत्यु पर विजय की ओर संकेत करता है। परमेश्वर ने मसीह को क्रूस पर चढ़ाए जाने के पश्चात् जिलाया लेकिन पुनरुत्थान पश्चात् यीशु का शरीर वही नहीं था अर्थात पूरी तरह से मांस और लहू का नहीं था, जैसे क्रूसीकरण के पहले था। अभौतिक, मांस रहित, "आत्मा में जिलाया गया" का भाव 3:19 में प्रयुक्त "उसी में" ("in which") की ओर संकेत करता है। पौलुस ने शरीर में और आत्मा में उपस्थिति के अंतर को स्पष्ट किया (कुलुस्सियों 2:5)। स्पष्टतया यह संभव है कि जब कोई शारीरिक से उपस्थित नहीं है तो वह "आत्मा में" उपस्थित हो सकता है।

यीशु "आत्मा में जिलाया गया" कहकर पतरस का विचार बदल गया। वह मसीह की मेल मिलाप का कार्य, पापों के लिए उसकी मृत्यु और उसका पुनरुत्थान से आगे बढ़कर उन लोगों पर न्याय की बात करता है जो मसीहियों को सता रहे थे। पतरस का मस्तिष्क प्रभु के प्रकाशन और उसके न्याय का जो उसके प्रकाशन का सामना करेंगे की ओर फिरा। यह न्याय का विषय ही है जो उसे नूह तक ले गया। एक समय था जब परमेश्वर ने मानवजाति पर सार्वजनिक न्याय चुकाया था। पतरस अपने पाठकों को बताना चाहता था कि नूह के दिनों का न्याय मसीह की अनुपस्थिति में नहीं हुआ था। आत्मिक रूप से, अभौतिक अवस्था में, जब नूह ने अपने दिनों के लोगों को प्रचार किया और उन्हें चेताया, जब उसने उन्हें परमेश्वर का संदेश सुनाया, तो यह मसीह ही है जो नूह के द्वारा बोल रहा था। प्रेरित ने भी उसी अधिकार के साथ कहा होगा जैसे मसीह ने मूसा या यशायाह के द्वारा बोला था, परंतु नूह अधिक उपयुक्त है क्योंकि परमेश्वर ने नूह के दिनों में संसार का न्याय किया था। उस दिन परमेश्वर ने अपने आपको, अपनी सामर्थ्य को और अपने उद्देश्यों को प्रकट किया था। परमेश्वर, पतरस, उसके पाठकों और उनके सताने वालों पर सार्वभौम न्याय के समय अपने आपको प्रकट करेगा। आत्मिक रूप से यीशु ने नूह के द्वारा बोला और न्याय किया गया। उसी तरह, यीशु आत्मिक रूप से पतरस और दूसरे प्रेरितों के द्वारा बोल रहा था। निश्चय उनके उद्घोषणा के बाद न्याय होगा।

इस अनुच्छेद की यह व्याख्या अगस्तीन के दिनों (पाँचवीं सदी ई.) तक जाती है और आधुनिक सक्षम विद्वानों ने सफलतापूर्वक इस व्याख्या का समर्थन किया है। यीशु का जाना और उसके प्रचार करने को आत्मिक, अभौतिक रूप से समझा जा सकता है। यीशु ने परमेश्वर के प्रवक्ता नूह के द्वारा उस समय बोला

जब न्याय सन्निकट और सार्वजनिक था। जब नूह ने बोला, यीशु ने भी बोला; जब पतरस ने बोला, यीशु ने भी बोला।

3:19 की एक और व्याख्या है जिस पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। यह सिद्धान्त कि उसके क्रूसीकरण और पुनरुत्थान के अंतराल, यीशु शरीर में मृतकों के संसार में गया, जिसे डीसेन्सस या अवरोहण कहा जाता है। प्राचीन कलीसिया में यह सामान्य सिद्धान्त था। अधोलोक में उसके जाने के संबंध में कई विश्लेषण है। संभवतः वह अपने विजय की उद्घोषणा करने के लिए, अपने आपको विश्वासियों पर प्रकट करने व उन्हें आश्वासन देने के लिए और दुष्टों पर दण्ड की आज्ञा सुनाने के लिए अधोलोक गया होगा। प्रेरित 2:27 और इफिसियों 4:9 जैसे अनुच्छेद इस सिद्धान्त का अनुमोदन करते हैं। प्रेरितों के विश्वास का उत्तरकालीन स्वरुप जो रुफिनुस (360 ई.) के अवधि की है में "वह अधोलोक तक गया" अनुच्छेद पाया जाता है। ऐसा तर्क दिया जाता है कि यीशु उस जगत में गया जहाँ आत्माएं इस समय के अंत होने की प्रतीक्षा करते हैं, जहाँ क्रूसीकरण के पश्चात् चोर के साथ यीशु गया (लूका 23:43), जहाँ विश्वासी और आज्ञा न मानने वाले अंतिम न्याय का प्रतीक्षा कर रहे हैं।

जबकि कुछ लोग अवरोहण (डीसेन्सस) को "दूसरा अवसर" धर्म विज्ञान समझते हैं, जो यहाँ इसका तात्पर्य नहीं है। यीशु का अधोलोक तक जाने का दूसरा अन्य कारण भी रहा होगा। यह अचिंतनीय है कि पतरस ने अपने पाठकों को स्मरण दिलाया कि यीशु शरीर के भाव से जब वह आत्मा में जिलाया गया तो वहाँ गया और किसी आत्मिक संसार में आत्माओं को या उसके क्रूसीकरण के बाद मृतकों के आत्माओं को प्रचार किया। फिर भी, यदि पतरस के कहने का यही अर्थ है तो इसके बाद के वाक्यांश में यह विचार अर्थहीन जान पड़ता है। यीशु का अधोलोक में उतरना अनियमित विचारधारा के संदर्भ के रूप में दिखाई पड़ता है। आगे, नए नियम के अन्य पुस्तकों में, अधोलोक में प्रचार करने के लिए यीशु का अवरोहण का अस्पष्ट समर्थन है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि पतरस ने इस प्रकार के अवरोहण का संकेत दिया; न ही ऐसा हुआ है का संकेत दिया। निष्कर्ष यह है कि सर्वनाम, "उसी में" ("in which") पूर्ववर्ती शब्द "आत्मा" ("spirit") है जो पिछली आयत का अंतिम शब्द है और यह अंग्रेजी वर्णमाला के छोटे अक्षर में लिखा जाना चाहिए। दूसरे मामलों में जहाँ पतरस ने "उसी में" ("in which") का प्रयोग किया है तो ऐसा लगता है कि यह सर्वनाम पूर्ववर्ती संदर्भ को संबंधित करता है लेकिन इस प्रकार के वाक्यांश का प्रयोग अपवाद है। हर जगह इसका प्रयोग इसके योग्यता पर आधारित है। जिस प्रकार 3:19 में इस सर्वनाम का प्रयोग किया गया है तो यह स्वाभाविक है कि इसके निकटतम पूर्ववर्ती वाक्यांश में यह "आत्मा" ("spirit") को संबंधित करता है।

आयत 20. जब पतरस ने लिखा कि जो लोग, **जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा न मानी**, अधोलोक में थे, उनको मसीह ने प्रचार किया था। नूह के दिनों में जिन लोगों ने आज्ञा नहीं मानी, वे पतरस के दिनों के समतुल्य लोग हैं जिन्होंने मसीहियों को सताया। दोनों परिस्थितियों में आज्ञा न मानने वाले, "उसको जो

जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने को तैयार है, लेखा देंगे" (4:5)। परमेश्वर ने जल प्रलय उपरांत लोगों के दुष्टता का त्वरित प्रतिक्रिया देते हुए उन्हें नाश नहीं किया। जिस प्रकार **परमेश्वर, नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा** वैसे ही पतरस के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा। दूसरे पत्री में प्रेरित कहेगा कि परमेश्वर, "प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले" (2 पतरस 3:9)। जब नूह ने अपने समय के लोगों को, जब वे जीवित थे, प्रचार किया था, तो मसीह ने भी नूह के समय के लोगों को प्रचार किया। नूह के समय के लोगों ने इस प्रचार पर विश्वास नहीं किया। अंत में, नूह धर्मी ठहराया गया; विश्वास न करने वालों का न्याय किया गया। पतरस के समय के लोगों के साथ भी ऐसा ही है।

जल प्रलय पूर्व मसीह, लोगों को नूह जिसको "धर्म के प्रचारक" का संज्ञान दिया गया है, के शब्दों के द्वारा चेतावनी दे रहे थे (2 पतरस 2:5), परमेश्वर अन्य स्पर्शनीय चेतावनियाँ भी उन्हें दे रहे थे। **जहाज बनाए जाने के समय** नूह लोगों को प्रचार कर रहा था। मसीह के प्रवक्ता नूह के समान, पतरस भी अपने समय के लोगों को स्पर्शनीय चेतावनियों के द्वारा चेता रहे थे। पतरस और दूसरे प्रेरितों के प्रचार के द्वारा, कलीसिया अस्तित्व में आ रहा था। इससे पहले प्रेरित ने कलीसिया को परमेश्वर का "आत्मिक घर" कहा है (2:5)। जिस तरह नूह के समय के कुछ लोगों ने अपने चारों ओर फैले बुराई से छुटकारा चाहा और उनका उद्धार हुआ, उसी तरह पतरस के समय के लोगों को भी परमेश्वर के आत्मिक घर में शरण लेकर उद्धार प्राप्त हो रहा है। जब परमेश्वर का न्याय आया तो जिन मसीहियों को पतरस ने संबोधित किया था उनके पास भी एक जहाज था जहाँ उन्होंने शरण ली थी। पतरस के पाठकों के लिए 3:20 का "जहाज" "आत्मिक घर" और 2:5 के "याजकों का पवित्र समाज" के समान है। यह सत्य है कि तब मसीहियों की थोड़ी संख्या थी, परंतु जब नूह ने जहाज बनाया था तब **बहुत थोड़े थे, केवल आठ लोग** जिनको बचाया गया। इसमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि पतरस के कुछ समकालीन पीढ़ियों को भी सुरक्षा मिलेगा।

नूह का उपमा (जो एक दृष्टांत के समान है), जहाज, और नूह के समय की दुष्टता अभी तक तो ठीक-ठाक है। फिर भी, जब पतरस ने कहा कि नूह के समय के आठ लोगों को **पानी के द्वारा सुरक्षित लाया गया**, तो हमें इसका सावधानीपूर्वक विश्लेषण करना पड़ेगा। यूनानी पाठ, जिसको अक्षरशः अनुवाद किया जाये तो वह ऐसा होगा, "वे पानी के द्वारा बचाए गए।" यह विचित्र वाक्यांश है। यह आशा की जा सकती है कि पाठ यह कहे कि ये आठ "पानी से बचाए गए" न कि "पानी के द्वारा बचाए गए।" निश्चय वे जल प्रलय के द्वारा नहीं बचाए गए, है ना? संभवतः पतरस का तात्पर्य यह था कि ये आठ परमेश्वर के न्याय, जो उनके समकालीन पीढ़ी पर "पानी द्वारा आया" से बचाए गए थे। यदि उसके कहने का यही तात्पर्य है तो पानी ने उनको बचाया। पानी ने धरती से मानव जाति के पापों को धो डाला, और इन आठों को आज्ञा न मानने वालों के

न्याय से बचाया। यदि पानी के द्वारा धोना न होता तो वे भी दुष्टों के संग जो उनको घेरे हुए थे, नाश हो जाते।

पतरस को यहाँ यह पूछना कि वह "पानी" का प्रसंग क्यों लाया, अप्रासंगिक नहीं होगा। निम्नलिखित आयत इसको स्पष्ट करता है। इस प्रसंग को वह यहाँ इसलिए लाया क्योंकि उसका विषय नूह के समय के आठ लोगों का उद्धार था। प्रेरित का इस संदर्भ में उसके पाठकों का उद्धार का विषय भी था। जिन मसीहियों को पतरस ने, नूह के दिनों के आठ लोगों के समान, संबोधित किया है, वे अपने समकालीन लोगों से जब (1) परमेश्वर का न्याय व (2) पानी आया तो उससे बचाए गए। माना कि, यह उपमा अपने आपमें सीमित है, परंतु इसकी समानता पतरस के पाठकों को आश्वासन देने के लिए पर्याप्त है कि जिस तरह परमेश्वर ने भूतकाल में कार्य किया था उसी तरह वह उनके साथ अभी भी कार्य कर रहा है। इससे पहले पतरस ने कहा कि उनका "नया जन्म" अविनाशी बीज से हुआ है। उनका नया जन्म तब हुआ जब उनका मसीह में बपतिस्मा हुआ (1:3, 23 की टिप्पणी देखें)। पानी में उनका बपतिस्मा वह क्षण था जब उन्होंने मसीह को पहन लिया था (गलातियों 3:27), वे उसके लोग हुए, और उसके मीरास के उत्तराधिकारी हुए। नूह के दिनों के आठ लोगों का उद्धार और पतरस के पाठकों के उद्धार में कई समानताएं पाई जातीं हैं। नूह के दिनों के पानी ने पृथ्वी के भ्रष्टाचारों को धो दिया था ताकि नूह और उसका परिवार उनके पीढ़ी के बुरे प्रभाव से स्वतंत्र हो जाएं। बपतिस्मा के पानी में पतरस के पाठकों ने यीशु के लहू के सामर्थ्य जो उनके पापों को हटा देता है, का अनुभव किया। क्योंकि उसके पाठकों के लिए बपतिस्मा का जो अर्थ था उस कारण प्रेरित चाहता था कि वे जाने कि मसीह ने नूह के द्वारा जिनको प्रचार किया था, उनके समान वे भी पानी के द्वारा बचाए गए हैं।

आयत 21. पहला पतरस में यह एकलौता आयत है जहाँ बपतिस्मा शब्द का स्पष्ट चित्रण किया गया है; इस अनुच्छेद में इसके महत्व पर कोई संदेह नहीं है। NASB अनुवाद **तदनुसार** (corresponding to that) पतरस के शब्दों के प्रभाव को कमजोर करता है। अक्षरशः उसने कहा कि पानी एक प्रतिरूप है (ἀντίτυπος, *आंटिपोस*)। नए नियम में इस शब्द का यह दूसरा प्रयोग है, इस शब्द का पहला प्रयोग इब्रानियों 9:24 में पाया जाता है। यहाँ विषय उद्धार है। जब नूह के दिनों के पानी ने उन आठ लोगों को उनके चारों ओर के भ्रष्ट पीढ़ी से बचाया, तो यह एक "समरूपता" ("type") है, यह बपतिस्मा का एक छाया था, जो अब तुम्हें बचाता है।

प्रेरित का अनुमान था कि उसके पाठक "बपतिस्मा" के महत्वता से पहले ही अवगत थे। उन्होंने समझ लिया था कि यह केवल कोई यांत्रिक कार्य नहीं था। सर्वप्रथम इसका प्रभाव मसीह के कार्य से प्रारंभ होता है जो "इसलिये कि मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मी ने, पापों के कारण एक बार दुःख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुँचाए; वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया" (3:18)। द्वितीय, यह उसके पाठकों के

विश्वास के प्रति प्रत्युत्तर से प्रारंभ होता है। यहाँ जो बात स्पष्ट है वह यह है कि "बपतिस्मा" उद्धार का अनुबंध नहीं है; यह "आंतरिक अनुग्रह का बाहरी प्रत्युत्तर" नहीं है। जैसे मसीह ने क्रूस पर मरते समय कार्य किया था, तो जब किसी का बपतिस्मा होता है वह वैसे ही कार्य करता है और पाप उठा लेता है। "बपतिस्मा" मनुष्य का कार्य है; परंतु यह ईश्वरीय कार्य भी है। पश्चातापी विश्वासी का जब बपतिस्मा होता है तो उसका उद्धार होता है (रोमियों 6:3, 4)। रोमन कैथोलिक की कई बातों में आलोचना करने में काल्वीन, ज्विंगली और अन्य सुधारक सही थे, परंतु जब बपतिस्मा के द्वारा विश्वास का प्रकटीकरण किया जाता है, के विचार धारा का उन्होंने तिरस्कार किया तो वे गलत थे।

डी. ए. कारसन भी गलत थे जब उन्होंने यह सलाह दिया कि मसीही परंपरा में बिना ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के मसीह की कलीसिया का बपतिस्मा के प्रति विशिष्ट दृष्टिकोण है।[20] मसीहियत की आरंभिक सदियों में बिना बपतिस्मा के किसी ने भी मसीह में होने की कामना नहीं की थी।[21] फ्रेड गीली सही थे जब उन्होंने लिखा,

> बपतिस्मा वह समय था जब मनुष्यों को प्रभावशाली रूप से अनंत जीवन के लिए बुलाया जाता था। [यह] संसार से कलीसिया में प्रवेश करने का स्मरणीय उत्सव था, अंधकार के वर्तमान बुरे संसार से परमेश्वर के पुत्र के प्रेम में नया जन्म, प्रभावशाली रूप से एक मसीही का संसार से अलग होने और कलीसिया में उसको स्थापित करने की सार्वजनिक घोषणा थी।[22]

उद्धरण बहुत हो सकते हैं। कई बाइबल के विद्वान जिनका मसीह की कलीसियाओं से संबंध नहीं है यह बताते हैं कि नए नियम और आरंभिक कलीसिया में बपतिस्मा, हृदय परिवर्तन और पापों से छुटकारा, एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। वे इस बात से सहमत नहीं होंगे कि नए नियम में आधुनिक कलीसिया के मसीहियों को किस प्रकार से निर्देशित किया जाता है परंतु कई ऐसे हैं जो यह समझते हैं कि आदि कलीसिया में कोई ऐसा नहीं था जिसका बपतिस्मा न हुआ हो। पतरस ने इसे स्पष्ट किया जब उसने लिखा, "बपतिस्मा अब तुम्हें बचाता है।" जब पौलुस ने लिखा, "तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है" (गलातियों 3:27), स्पष्ट आशय यह है कि जिन्होंने मसीह में बपतिस्मा नहीं लिया है उन्होंने मसीह को नहीं पहना है। स्पष्टतया जिन्होंने मसीह को पहन लिया है वही मसीही मीरास के सहभागी होंगे।

पतरस ने स्पष्ट किया। जिसने भी यह माना कि "बपतिस्मा" का महत्व केवल देह की संस्कार है तो उन्होंने इस संबंध में नए नियम की शिक्षा को ठीक से नहीं समझा। एडवार्ड गॉर्डन सेलवीन के शब्दों में, बपतिस्मा "केवल शरीर को शुद्ध करने का रीति रिवाज नहीं है, बल्कि संपूर्ण मनुष्यत्व का मसीह में परमेश्वर के प्रकाशन का संपूर्ण नैतिक समर्पण है।"[23] "बपतिस्मा," परमेश्वर और उसके लोगों के मध्य केवल यूँ ही एक वाचा नहीं है। इसके विपरीत, खतना, एक शारीरिक कार्य था जो वाचा का प्रतीक था। परमेश्वर ने तब कार्य नहीं किया जब केवल

एक आठ वर्ष के बच्चे का खतना होता था। खतना पूर्व एक यहूदी बालक का पैदाइशी परमेश्वर के लोगों के संग गिनती होती थी। जब एक विश्वासी बपतिस्मा के द्वारा परमेश्वर से अच्छे विवेक के लिए विनती करता है, तो परमेश्वर कार्य करता है क्योंकि मसीह "पापों के लिए मर गया" (3:18); वह इसलिए कार्य करता है क्योंकि यीशु मसीह को उसके मृतकों में से पुनरुत्थान के द्वारा विजेता घोषित किया गया है। जब मसीह में किसी का बपतिस्मा होता है, तो वह अपने नए जन्म के कारण परमेश्वर के परिवार का सदस्य बन जाता है।

यीशु ने क्रूस पर "भले विवेक" के लिए जो दाम चुकाया उसका यह निवेदन है। पतरस के लिए "विवेक" का अर्थ आधुनिक भाषा शैली में प्रयोग होने वाले अर्थ जैसा नहीं है। यहाँ विवेक का अर्थ एक व्यक्ति के अंदर उठने वाली एक मध्यम भीतरी स्वर नहीं है। बल्कि, यह तो किसी व्यक्ति का परमेश्वर व अपने संगी भाई के सम्मुख खड़ा होना है। क्योंकि जब किसी का बपतिस्मा होता है तो उसका "भला विवेक" वह ज्ञान है जो वह अपने आप में, परमेश्वर व अपने संगी साथियों के मध्य बांटता है। यह उसे परमेश्वर के लोगों के मध्य खड़े होने का, और उसके प्रकट होने पर उस मीरास का उत्तराधिकारी होने का भरोसा और आश्वासन देता है। पतरस के दिनों में "विवेक" का सामाजिक क्षेत्र आधुनिक युग के लोगों से कहीं अधिक था।

इसकी अवलोकन की आवश्यकता है कि पतरस ने "बपतिस्मा" को शरीर का स्नान समझा। इसका अभिप्राय स्नान या धोने से है। यदि हम बपतिस्मा को पानी का छिड़काव या जिस व्यक्ति का बपतिस्मा होना है उस पर पानी का थोड़ा छिड़काव समझते हैं तो उसका उद्धरण अपर्याय ठहरता है। इसके साथ ही, पतरस ने कहा कि "बपतिस्मा" लेने वाले की ओर से "भले विवेक" के लिए यह एक "निवेदन" है। इसका आशय यह है कि जिसका बपतिस्मा हो रहा है वह एक परिपक्व व्यक्ति है ताकि वह अपने लिए निवेदन कर सके। पतरस ने समझा कि बपतिस्मा पानी में उस व्यक्ति का डूबकी लेना है जो इतना बड़ा हो कि वह अपने खोए हुए स्थिति को समझ सके ताकि वह भले विवेक के लिए निवेदन कर सके।

आयत 22. नए नियम में पुराने नियम के पुस्तकों में से भजन संहिता से अधिक किसी अन्य पुस्तक का उल्लेख नहीं किया गया है,[24] और भजन संहिता में भजन 110 सबसे अधिक उल्लेखित है और भजन 110 में "मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है, कि तू मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूं" (भजन 110:1) से अधिक कोई भाग उल्लेखित नहीं है। पतरस चाहता था कि उसके पाठक यह जाने कि यीशु मसीह **स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया**। यीशु मसीह का ऐतिहासिक पहलू है। वह एक पुरुष, कुँवारी से पैदा हुआ, नासरत में पला, एक प्रचारक, और भविष्यवक्ता था। उसने एक अंधे को चंगा किया, आश्चर्यजनक रूप से पाँच हजार को खिलाया, और उसके तीन शिष्यों के सामने उसका रूपांतरण हुआ। पिलातुस के आधीन और यहूदियों (उसके अपने लोग) के विनती के अनुसार, रोमियों ने उसे क्रूस पर चढ़ाया। प्राथमिक मसीही विश्वास यह है कि उसके जीवन काल में ये

सब घटनाएं एवं अन्य घटनाएं घटीं, लेकिन यही सब कुछ नहीं है। केवल पुरातत्व विषयक जिज्ञासा मसीह के अनुभव को तृप्त नहीं कर सकती है। यीशु अब राज्य करता है। **वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया; और स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी उसके अधीन किए गए हैं।** पतरस का यीशु पर रुचि एक मनुष्य से बढ़ कर था; उसकी रुचि इस बात पर भी थी कि यीशु परमेश्वर के पुत्र के रूप में उसके लिए क्या थे।

"दाहिनी ओर बैठना" इसकी अपनी चिह्न है। "दाहिनी हाथ" घनिष्ठता और अधिकार का सूचक है। पिता और पुत्र के बीच के सारे संबंध को समझने का प्रयास व्यर्थ है। वे एक हैं परंतु पिता परमेश्वर सिंहासन पर है और यीशु उसके दाहिने हाथ है। पतरस ने त्रिएकत्व के सिद्धांत का विश्लेषण नहीं किया है। उसको केवल इतना चिंता था कि वह इस बात का अंगीकार और पुष्टि करे कि यीशु का परमेश्वर के साथ ऐसा संबंध है जिसकी तुलना सृष्टि में किसी से भी नहीं की जा सकती है। सारे "अधिकार और सामर्थ्य" चाहे स्वर्ग की हो या पृथ्वी पर की, सब उसकी आज्ञा पर है। वह अपने लोगों पर राज्य करता है। वह उनकी चिंता करता है, उनको अनुशासित करता है और उनको आगे बढ़ाता है। वह उनका दयालु/हितैषी राजा है।

अनुप्रयोग

जो जीवन की इच्छा रखते हैं (3:8-12)

मेरे एक मित्र ने मुझे बताया कि वह अपनी कार से उतरकर एक किराने की दुकान में जा रहा था और वहाँ से कुछ मकानों की दूरी पर उसने एक दुःखी औरत को घर से बाहर निकलते देखा। एक आदमी उसका पीछा कर रहा था। वह उसको श्राप और हर प्रकार की गालियाँ दे रहा था, फिर वह उस पर कूद पड़ा और उसको पीटने लगा। मेरे मित्र ने 911 में फोन किया और थोड़ी ही देर में वहाँ पुलिस आ गई। जो आदमी इस औरत को पीट रहा था जब उसे पता चला कि मेरे मित्र ने पुलिस को बुलाया था तो उसने मेरे मित्र को धमकाया और उसके जीवन को कुछ महीनों तक दुःखद बना डाला।

मेरे मित्र के समान मुझे कभी भी धमकाया और सताया नहीं गया है परंतु इससे मिलती जुलती बातें मेरे साथ हुई है। हमारे चारों ओर लोग घृणा, हिंसा, श्राप और क्रोध में रहते हैं। किसी को यह पता नहीं होता है कि उनके साथ क्या करना चाहिए, उनसे घृणा करना चाहिए या फिर उनसे प्रेम करना चाहिए। इस प्रकार के जीवन को पतरस के इन शब्दों से विभेद कीजिए :

> अतः सब के सब एक मन और कृपामय और भाईचारे की प्रीति रखनेवाले, और करुणामय, और नम्र बनो। बुराई के बदले बुराई मत करो और न गाली के बदले गाली दो; पर इसके विपरीत आशीष ही दो, क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने के लिये बुलाए गए हो (1 पतरस 3:8, 9)।

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि संसार में ऐसे भी लोग हैं जिन्होंने पतरस के शिक्षा के अनुसार जीना सीखा।

पतरस ने जो नहीं कहा उस पर ध्यान करना आवश्यक है। जीवन की अच्छाई और भरपूरी इस पर निर्भर नहीं करता है कि कौन कितना धन संचय करता है। यह इस पर भी निर्भर नहीं करता है कि लोग कितना प्रभावशाली/ताकतवर बनते हैं। एक अच्छे जीवन की माप इस पर भी निर्भर नहीं करता है कि कौन कितने ताकतवर लोगों को आदेश देता है। संतुष्टि भरा जीवन इस प्रकार से नहीं आता है। जीवन एक दूसरे मार्ग पर चलता है। पतरस सिद्धांतवादी नहीं था। मसीह को जानने के द्वारा, बहुत से उसके लोगों ने जीने का मार्ग जान लिया था।

मसीही लोग स्वर्ग की आनंद के लिए तरसते हैं; परंतु यीशु ने इसको स्पष्ट कर दिया था कि उसका राज्य, अर्थात स्वर्ग का राज्य, मानव इतिहास में, जिन्होंने उसको अपना लिया था, के लिए पहले ही आ चुका है। अभी इसका पूरी तरह से अनुभव किया जाना शेष है परंतु मसीह में स्वर्ग का राज्य हमारे बीच में है। "तुम आशीष के लिए बुलाए गए हो," पतरस ने कहा। मसीहियों को स्वर्ग की राज्य का आनंद उठाने के लिए प्रभु के आने तक प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। यीशु ने गवाही दी, "परमेश्वर का राज्य प्रगट रूप से नहीं आता। और लोग यह न कहेंगे, कि देखो, यहां है, या वहां है, क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है" (लूका 17:20ब, 21)।

मैं एक पत्र का एक भाग बांटना चाहूँगा। जिस व्यक्ति ने इस पत्र को लिखा है उसकी इच्छा इसे प्रकाशित करने की नहीं है, फिर भी वह इसे छपते हुए देखकर विचलित नहीं होंगी। इसमें उनका नाम नहीं लिखा होगा। यह सच्चे हृदय का सरल अभिव्यक्ति है। यह पत्र एक कम उम्र वाली महिला ने अपने से बड़ी उम्र वाली महिला को लिखा है जिसने उसे प्रभावित किया था और उसे मसीह से मिलाया था। पतरस ने जो लिखा उससे इस पत्र का बहुत अधिक संबद्धता है। जवान महिला ने अपने मित्र को इस प्रकार लिखा :

> आप जानते हैं जब हम मिले थे; मैंने जाना ... प्रेम की गरमाहट, और बहाना न बनाना जिसने मुझे प्रभावित किया। मैंने आपमें फलता-फूलता आत्मा देखा - कहीं भी आंतरिक निष्क्रियता नहीं देखी। मैं कह सकती हूँ कि आप एक प्रगतिशील व्यक्तित्व हैं और यह मुझे पसंद है। मैंने आपका दृढ़ स्वाभिमान देखा, जो स्वयं सहायक पुस्तक पर निर्भर नहीं है, लेकिन उससे भी कहीं और अधिक गहराई में है। मैंने देखा कि आप न केवल अपनी सुविधाओं, स्वार्थ, आर्थिक लाभ बल्कि अपने विचारधाराओं और प्राथमिकताओं पर जीतीं हैं ... आपने कृपा और दया भाव दिखाया है - और न केवल आपने यह मुझे दिखाया है बल्कि दूसरे लोगों के साथ भी आपने ऐसा ही किया है। और हर प्रकार के भले कार्य के लिए स्थिर रहीं। आपने जिस पर विश्वास किया है कि वह सत्य है तो उसके लिए आप समाज के विरुद्ध भी जाने को तैयार थीं, उसके लिए चाहे लोग कुछ भी क्यों कहें और उसके लिए चाहे आपको कितना नुकसान भी

उठाना क्यों न पड़े। और इस कारण और अन्य बातों के लिए, मैंने भी जो आपके पास है उसे पाना चाहा।

मसीह में होने का तात्पर्य केवल आने वाले संसार के बारे में नहीं है। परमेश्वर ने अपने लोगों को इस युग के जीवन की कुंजी दी है। पतरस का साधारण सूत्र यहाँ पाया जाता है।

सर्वप्रथम, दयालु होने के लिए स्मरण रखें। दयालु होने का तात्पर्य थोड़ी बातों में प्रेमी होना है। यह एक बच्चे को सहायता प्रदान करने जैसा है। यह उसकी खबर लेना है जो अकेला है या फिर बीमार है। यह किसी पर मुस्कराना है, दूसरों के लिए दरवाजा खुला रखना है, वृद्ध महिला को पढ़ने में सहायता करना है, फर्श पर पोंछा लगाना है, दूसरे व्यक्ति की समस्या सुनना है और किसी का हाथ पकड़ना/सहायता करना है। दयालुता, नम्रता और शालीनता की प्रथम चचेरी बहिन है। थोड़े गुणों में किसी व्यक्ति के चरित्र का, जिस पर कई बार कोई ध्यान नहीं देते हैं, पता लगाना संभव है, कुछ कार्य ऐसे होते हैं जिनको अधिक महत्व न जानकर अनदेखा कर दिया जाता है।

जब हमारे सम्मुख श्रोता होते हैं तो हम में अधिकांश लोग उदार, विचारवान और नम्र हो सकते हैं; लेकिन अनियंत्रित समय में, हम अपना असलियत दिखाते हैं। उदारता किसी विशेष अवसर पर दिए गए आदेश का पालन करना नहीं है; यह जीवन का ताना बाना है। कोई ताली ठोककर नहीं कहता है, "देखा! मैंने उदार होने की आज्ञा का पालन किया है। आओ हम आगे जो भी है उसके ओर बढ़ जाएं।" दयालुता कभी समाप्त नहीं होता है। यह उस बच्चे को दुलार करने जैसा है जो गिर गया है और जो अपने छिले घुटने के लिए रो रहा है। यह बच्चे की सहायता करना है, उसके घाव धोना है, घाव पर बैंड ऐड लगाना है, और उसके बाद उसे उसके मार्ग में भेजना है। बहुत अधिक नहीं, परंतु दया दिखाने का थोड़ा सा कार्य। जब किसी परिवार में देहांत हो जाता है या वे अपने बिल जमा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, तो क्या कोई है जो उनके सांत्वना के लिए चिट्ठी लिख रहा हो या फिर उस महीने का उनका बिजली का बिल भर रहा हो। कोई नहीं जानता। यह एक बड़ी बात नहीं है। केवल छोटा सा उदार का कार्य है।

जब पतरस यीशु के जीवन और कार्य का सार प्रस्तुत करना चाहता था तो उसने उन शब्दों का प्रयोग किया है जो प्रभु के साधारण दया भाव को दर्शाता है: "कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया: वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था" (प्रेरित 10:38)। मरकुस के सुसमाचार में एक कोढ़ी यीशु के सामने आकर घुटने के बल विनती करने लगा, "यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।" यीशु ने तरस से भरकर उसको छूआ और उसे शुद्ध कर दिया (मरकुस 1:40, 41)। यीशु के आश्चर्यजनक सामर्थ्य के बारे में कुछ भी क्यों न बोला जाये, उसको अपने आपको परमेश्वर के पुत्र के

रूप में दिखाने के लिए कुछ भी क्यों न कहा जाये, यह तो दया दिखाने का एक साधारण कार्य था।

जब यीशु सामरिया से होकर जा रहा था तो वह एक कुएँ के पास विश्राम करने के लिए रुक गया। एक स्त्री पानी भरने के लिए आई। यीशु ने सभी मर्यादाओं को तोड़ते हुए अपने बारे में प्रगाढ़ सत्य उस पर प्रगट किए जिसको उसके शिष्य भी नहीं समझ सकते थे। वह उस स्त्री के प्रति दयालु थे।

कई प्रकार के आश्चर्यकर्म थे। यदि यीशु केवल अपना सामर्थ्य दिखाना चाहता तो वह मंदिर के कंगूरे को कुछ दिनों के लिए हवा में उड़ा देता। यह बड़ा प्रभावशाली होता। यीशु ने जिस प्रकार का आश्चर्यकर्म किया था वे दया के कार्य थे। हम सब स्वर्ग जाना चाहते हैं, लेकिन हमें स्वर्ग को दयालु होने के लिए प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। परमेश्वर का राज्य यहाँ और अभी है। अभी भी इससे उत्तम प्रगट होना शेष है, लेकिन राज्य अभी है।

राज्य तब सिद्ध होता है जब मसीही लोग दया भाव के साथ जीते हैं, लेकिन पतरस दूसरे पहलुओं की ओर ध्यान केन्द्रित कर रहा था। *दूसरी बात, पतरस ने अपने पाठकों को बताया कि स्वर्ग के राज्य का आनंद उठाने के लिए बुराई के बदले भलाई करना है।* वह अपने विचारों को जारी रखता है : "बुराई के बदले बुराई मत करो; और न गाली के बदले गाली दो; पर इस के विपरीत आशीष ही दो: क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने के लिये बुलाए गए हो" (1 पतरस 3:9)। जहाँ तक हो सके, यदि मसीही लोग इस नियम के अंतर्गत जीवन जीते हैं तो उन्हें परमेश्वर के राज्य की बाट जोहने की आवश्यकता नहीं है। राज्य उनके मध्य है।

इस पत्री में पतरस ने मसीह के दुःख को कुछ इस प्रकार संबोधित किया है : "वह गाली सुन कर गाली नहीं देता था, और दुःख उठा कर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था" (1 पतरस 2:23)। पतरस ने बताया कि यीशु ने हमारे लिए एक आदर्श छोड़ा। प्रभु की निंदा की गई, उसको लोगों ने गाली दी परंतु उसने बुराई का बदला नहीं दिया। बल्कि उसने दया दिखाई। कुछ वर्षों पहले जब यीशु क्रूस पर लटका प्राण दे रहा था तो उसने कहा,

> परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिये प्रार्थना करो। जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भले और बुरे दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर वर्षा करता है (मत्ती 5:44, 45)।

यीशु ने अपने लोगों को किस प्रकार का जीवन जीना चाहिए सिखाया; फिर उसने स्वयं उन्हें यह जीवन जीकर दिखाया।

यीशु ने प्रथम सदी के यहूदियों का परमेश्वर के राज्य के प्रकटीकरण के विचारों पर क्रांतिकारी परिवर्तन लाया। उनमें से कुछ लोगों ने इस धरती पर दाऊद के राज्य की अपेक्षा की थी जिसमें यहूदी उसके साथ इस संसार पर राज्य करते। तो कुछ लोगों की यह अपेक्षा थी कि जब परमेश्वर हस्तक्षेप करेगा तो इस

धरती की गतिविधियों का तुरंत अंत होगा, वह धरती को आग से जलाएगा और मनुष्यों का समय समाप्त होगा। इन दोनों विचार धारा में कुछ सच्चाई तो है परंतु पूरी सच्चाई नहीं है। परमेश्वर के राज्य की पूर्णता समय के अंत में मसीह के आगमन पर प्रतीति की जाएगी। फिर भी, राज्य पूरी तरह से आने वाले जगत का मामला नहीं था।

मानव जाति की सबसे प्राथमिक नियम में से एक नियम दंड का नियम है जिसे बहुधा लतीनी में *lex talionis*, लेक्स टालिओनीस से अभिव्यक्त किया जाता है। पुराना नियम में यह "आँख के बदले आँख" (लैव्यव्यवस्था 24:19, 20) से अभिव्यक्त किया गया है। परमेश्वर के राज्य में लोग एक दूसरे नियम के अनुसार जीते हैं, एक ऐसा नियम जो यह कहता है बुराई का बदला बुराई से न दो। पतरस किसी देश या राष्ट्र के नियम को संबोधित नहीं कर रहा था। वह यह नहीं कह रहा था कि हत्यारे को छोड़ दो ताकि वह और हत्या करे। वह अपने श्रोताओं को व्यक्तिगत रूप से संबोधित कर रहा था। "बदला तुम्हारा विनाश न कर दे," पतरस कह रहा था। प्रेरित ने "परमेश्वर का राज्य" जैसे वाक्यांश का प्रयोग नहीं किया। बल्कि उसने व्यवहारिक जीवन के बारे में बातचीत किया। जीवन परमेश्वर का राज्य है। यदि कोई अपने जीवन में अपनी लालसाओं को हावी होने देगा तो उसे यह जीवन नहीं मिलेगा।

जिन मसीहियों को पतरस ने संबोधित किया था उन्होंने दुःख उठाया था। वे यह जानते थे कि मसीह के लिए दुःख उठाने का क्या अर्थ है। जिसके बारे में उन्होंने दुःख उठाया था, उसका हिसाब बराबर करने की उनमें क्षमता भी थी। पतरस ने कहा, "इसे न करो। बुराई के बदले बुराई न करो।" हमें इसे थ्योरी तक ही सीमित नहीं रखना है। कुछ वर्षों पहले टेक्सास में एक धनी स्त्री थी जिसे पता चला कि उसका पति किसी दूसरी स्त्री के साथ अनैतिक संबंध स्थापित कर रहा है। एक दिन वह उस होटल के बाहर, जहाँ उसका पति था, प्रतीक्षा कर रही थी; जैसे ही उसने अपने पति को होटल से बाहर आते देखा, उसने कार गियर में डाली और अपने पति पर चढ़ा दी। वह मर गया। उसने हिसाब चुकता कर लिया। इस प्रकार का दृश्य प्रतिदिन दोहराया जाता है। इस बदले से उसने किस प्रकार की आनंद की अनुभूति की कामना की होगी? कई लोग अपने मन में अन्याय की योजना बनाते हुए सोते हैं। वे सोचते हैं कि इसके बारे में वे क्या करेंगे, वे हिसाब कैसे बराबर करेंगे। लेकिन परमेश्वर के राज्य से इस प्रकार का विचार हटा दिया जाएगा।

जब एक व्यक्ति घिनौने शब्द, अपमान, गंदे टिप्पणियों को इस तरह अनदेखा करता है मानो जैसे वे कभी कहे न गए हों, तो यह उस व्यक्ति के मन की धन्य स्थिति होगी। जब एक व्यक्ति अपमान के बदले आशीष देता है तो यह उस व्यक्ति के जीवन का इनाम समझा जाएगा। अपने शत्रुओं से पीछा छुड़ाने का सबसे प्रभावशाली तरीका यीशु ने हमें बताया है। उसे मित्र बनाओ।

पतरस का परमेश्वर के राज्य का सूत्र इससे भी आगे है। सर्वप्रथम, स्मरण रहे कि आप दयालु बने। दूसरा, बुराई के बदले बुराई न दो। तीसरा, अपनी जीभ की

रक्षा करें। जब उसने 1 पतरस 3:10, 11 लिखा, तो प्रेरित ने भजन 34:12-14 के द्वारा अपने पाठकों से विनती की : "वह कौन मनुष्य है जो जीवन की इच्छा रखता, और दीर्घायु चाहता है ताकि भलाई देखे? अपनी जीभ को बुराई से रोक रख, और अपने मुंह की चौकसी कर कि उससे छल की बात न निकले। बुराई को छोड़ और भलाई कर; मेल को ढूंढ और उसी का पीछा कर।" याकूब ने इसका इस प्रकार विश्लेषण किया, "इसलिये कि हम सब बहुत बार चूक जाते हैं: जो कोई वचन में नहीं चूकता, वही तो सिद्ध मनुष्य है; और सारी देह पर भी लगाम लगा सकता है" (याकूब 3:2)। यीशु ने कहा, "और मैं तुम से कहता हूँ, कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे। क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा" (मत्ती 12:36, 37)। जो लोग अपनी जीभ पर नियंत्रण नहीं रखते हैं उनसे जीवन रूठ जाता है तो ऐसी स्थिति में परमेश्वर के राज्य की अनुभूति नहीं होती है।

संदर्भ यह दर्शाता है कि पतरस का चिंता शांति ढूँढना और उसका पीछा करना है। राज्य में जीवन के लिए शांति एक महत्वपूर्ण घटक है। शांति के मार्ग में जीभ पर नियंत्रण रखना एक महत्वपूर्ण कदम है। परमेश्वर के बारे में हम क्या बोलते हैं वही हमारे जीभ पर नियंत्रण ला सकता है। यह जानकर आश्चर्य होता है कि किस प्रकार लोग परमेश्वर के पवित्र नाम को इधर उधर उछालते हैं। कुछ शब्द हैं जो आराधना और स्तुति के लिए सुरक्षित रखे गए हैं। उनमें से एक परमेश्वर का नाम है। चाहे फुटबाल का खेल हो या फिर समाचार प्रसारण, रोडनी डांगेरफील्ड के शब्दों में परमेश्वर को सम्मान मिलता है।

उत्कृष्ट छाया चित्र गॉन विद द विंड सन् 1939 में प्रसारण किया गया था। छाया चित्र के अंत में रेट बटलर ने स्कारलेट की ओर देखकर कुछ कहा जिसने मीडिया के लिए नए युग का प्रारंभ किया। मैं उन शब्दों के बारे में सोचते हुए बढ़ा जो नम्र समूह के लोगों के योग्य नहीं थे। गॉन विद द विंड ने दरवाजा खोल दिया था। हमारे जीवन में अश्लील शब्द भर गए हैं। नम्र संगति और जीवन के गंदे शब्द आपस में मिल गए हैं। पतरस ने कहा कि अपनी जीभ की चौकसी करने का तात्पर्य अपने आपको धोखे से दूर रखना है, लेकिन इसके साथ इसके और भी अर्थ है। इसका तात्पर्य यह भी है कि उन मामलों से अपने आपको अलग रखना है जो बुरा है वह बुराई जैसे दिखता है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि उन बातों की तलाश में लगे रहो जो शांति स्थापित करता है।

उपसंहार: संसार की दयनीय स्थिति और पीड़ा के मध्य हमें कुछ लोग मिल जाते हैं जो जीवन का मार्ग जानते हैं। उनके परिवार, आदर जो उनको मिला, जिस प्रकार दूसरे उनके बारे में चर्चा करते हैं, उनके चेहरे की मुस्कान - सभी बातें उनके जीवन की शांति और आनंद बयां करतीं हैं। पतरस ने तीन महत्वपूर्ण अवयवों का वर्णन किया है जो मसीह में जीवन के प्रति सहयोग करता है। ये हैं (1) स्मरण रहे आप दयालु बने, (2) बुराई के बदले भलाई करें, और (3) अपनी जीभ की चौकसी करें।

भलाई के लिए प्रशंसा पाना (3:8, 9)

सड़क में गाड़ी चलाते समय कोई भी कभी-कभी वृक्षों का वह झुंड देख सकता है जिसको मानो किसी प्रकार का सदमा पहुँचा हो। जो कभी नए सीधे खड़े और लंबे वृक्ष थे अब वे झुककर जमीन से लटक गए हैं। मानो वे कुछ चिड़चिड़े से हो गए हों; और कुछ वृक्षों के परखच्चे उड़ गए हों।

ये वृक्ष इस बात के गवाह हैं कि उनके मार्ग में बर्फीला तूफान आया था। संभवतः कई वर्ष पहले तूफान आया था लेकिन वृक्ष अभी भी उस तूफान के प्रभाव को अनुभव करते हैं। हाड़ कंपाने वाली वर्षा टहनियों में एकत्र हो गई थी, जिसने उन टहनियों को झुका दिया, उनका आकार बिगाड़ दिया, और तोड़ दिया।

मुझे लगता है कि उन वृक्षों में एक दृष्टांत छिपा है। मेरा संपर्क जिद्दी लोगों से हुआ जो अपने अच्छे समय पर तकिया लगाए हुए थे, जो लोग उनसे अधिक अनुभवी थे उनके सलाह सुनने को वे तैयार नहीं थे। जिस तरह वृक्षों की टहनियों में बर्फ जमा हो गया था उसी तरह पाप उनके मन में भी जमा हो जाता है। यह उन्हें तोड़ डालती है। "सहानुभूति," "दया," "नम्रता," और "भलाई" (1 पतरस 3:8, 9) जैसे शब्द उनके लिए अधिक मायने नहीं रखते हैं। पाप लोगों को झुका देती है। कुछ समय पश्चात् उन्हें केवल जीवन की गंदगी ही दिखाई देती है। उनके जीवन में आनंद नहीं दिखाई देता है।

सच्चाई और उपयुक्तता (3:8)

जेन और मेरे विवाह के पश्चात् हम फ्लिंट, मिशीगन से हेन्डरसन, टेनेस्सी आए। मेरा नामांकन फ्रीड-हार्डमैन महाविद्यालय में हुआ। जब हमने यात्रा प्रारंभ ही किया था तो तभी हमारी कार जवाब देने लग गई थी। हम जितना अधिक आगे गए, कार की समस्या उतना ही बढ़ता गया। एक ऐसा समय आया जब उसका इंजन बंद हो गया तो मैं उसको केवल धक्का देकर और क्लच दबाकर ही स्टार्ट कर सकता था। नैशविल में पहुँचकर इंजन पूरी तरह बंद हो गया। एक सामान ढोने वाले ट्रक में बैठे एक व्यक्ति ने मेरे कार में फ्रीड-हार्डमैन पार्किंग का स्टीकर चस्पा देखा। वह एक मसीही था और मेरी सहायता करना चाहता था। थोड़ा धक्का देने के बाद मैंने क्लच दबाया और फिर कार चालू हो गई। वह चाहता था कि हम थोड़ा रुक जाएं ताकि वह हमारे लिए दिन की भोजन का व्यवस्था कर सके, लेकिन मैं उस फॉर्ड कार की चालू इंजन को नहीं रोकना चाहता था। हम आगे बढ़ गए। बाद में मैंने जाना कि यह कितना दया का कार्य था। उस व्यक्ति ने इस बात को समझा कि हम उसके जरूरतमंद भाई या बहन हो सकते हैं और उसने हमारी सहायता की। मैं उसका नाम नहीं जानता हूँ, लेकिन मैं उसका कर्जदार हूँ। उसने मुझे सिखाया कि सच्चाई अभिकथन से बढ़कर है। सच्चाई भक्तिपूर्ण जीवन जीने से है।

विवेक शुद्ध रखना (3:16)

फ्रैंक क्लार्क के बारे में जिस पहली बात पर मैंने ध्यान दिया वह उनके हाथ थे। वे पत्थर की भाँति कठोर थे। उनके साथ हाथ मिलाने के बाद ऐसा लगता था मानो जैसे मैं किसी शिकंजा में फंस गया हूँ। वह नाटे थे, उनके चेहरे में सदा मुस्कान रहती थी, और उनके पास बताने के लिए कहानी थी। वह किसी भी प्रश्न का उत्तर जानते थे। यदि किसी को उनके उत्तर से समस्या होती थी तो इसके बारे में व्याकुल नहीं होते थे। कोई सुनना चाहे या न सुनना चाहे, वह मुस्कुराकर अगले प्रश्न का उत्तर देने के लिए तैयार हो जाते थे। फ्रैंक थोड़ा हठीले थे, लेकिन वे एक महान वृद्ध थे।

फ्रैंक और उनकी पत्नी एडना जिस कलीसिया में आराधना के लिए जाते थे वह ग्रामीण क्षेत्र में एक छोटा भवन था। यह दशकों पुरानी थी। सर्दियों में इसकी दरारों व छिद्रों में ग्रामीण क्षेत्र के सभी ततैये सीतनिद्रा करते थे। ग्रीष्मकाल आते ही जब वे अपने निद्रा से जाग उठते थे तो फ्रैंक इन पर अधिक ध्यान नहीं देते था। वह उस खिड़की के पास जाते थे जहाँ लगभग आधा दर्जन ततैये इकट्ठा होते थे, तब वे अपने अंगूठे से एक-एक करके उनको मसल देते थे। ततैये वहीं रहते थे और वह उनको अपने अंगूठे से पीस देते थे।

मैं विस्मित होकर उसे देखता था। "आप ऐसा कैसे कर लेते हैं?" गंभीर मुद्रा में मेरी ओर मुड़कर यह कहते, "इस बात में एक रहस्य है। आपने ध्यान दिया होगा कि जब मैं अपने दाहिने हाथ के अँगूठे से ततैये को मसलता हूँ तो मेरा बाएं हाथ जोर से मुट्ठी बांधता था। जब आप ऐसा करोगे तो वे आपको डंक नहीं मारेंगे।" "ठीक है न" मैंने हंसकर बोला। पास ही खड़ी एडना ने कहा कि "यह ठीक है। मैंने इन्हें ऐसा करते हुए कई बारे देखा है। इनको कभी भी इन ततैये/बर्रे ने डंक नहीं मारा है।"

फ्रैंक और एडना क्लार्क। दोनों का अब देहांत हो चुका है। संसार ने जब इन्हें खोया तो इसके कुछ रंग फीके पड़ गए। जब मैं पतरस के इन शब्दों को पढ़ता हूँ तो वे मेरे विचारों में जीवित हो उठते हैं, "और विवेक अर्थात्, मन या विवेक भी शुद्ध रखो, इसलिये कि जिन बातों के विषय में तुम्हारी बदनामी होती है उनके विषय में वे, जो मसीह में तुम्हारे अच्छे चाल-चलन का अपमान करते हैं, लज्जित हों" (1 पतरस 3:16)। मैं उनके अच्छे व्यवहार की गवाही दे सकता हूँ। पड़ोसी महिला के पास कार नहीं था, लेकिन उनको कोई परेशानी नहीं थी। क्योंकि उन्हें मालूम था कि जब उनको सवारी की आवश्यकता होगी तो किसको बुलाना चाहिए। फ्रैंक और एडना ने दो अच्छी लड़कियों की परवरिश की, हर वसंत ऋतु में उन्होंने बाग लगाया, इस बाग की अधिकांश फल उन्होंने यूँ ही दे दिया, अपने बिल जमा किए, और उन्होंने अपने काम से मतलब रखा। उनके होंठों पर बुराई, गंदी भाषा, धोखा-धड़ी और श्राप नहीं था। किसी भी दिन एक या दो कार उनके घर के सामने उनका हाल चाल पूछने के लिए रुकता था। वह कछुवे का सूप और बदबूदार चीज, जिसे नाक को भी अच्छी नहीं लगती है, खाना पसंद करते थे। वह (एडना) आपको दिखायेगी कि बुनाई कैसे की जाती है और पत्ता गोभी कैसे

उगाई जाती है। उन्होंने, उनको (फ्रैंक को) कहा कि क्या करना है लेकिन फ्रैंक वही कार्य करते थे जो उनको भाता था। परमेश्वर, फ्रैंक और एडना क्लार्क के लिए आपका धन्यवाद। यह सत्य है। मसीह ने अपने लोगों को आशीष दी है। उन लोगों को शर्म आनी चाहिए जो इन अच्छे लोगों के लिए गंदी बात बोलते हैं। एक अच्छे जीवन के साथ किस प्रकार की आशीष की तुलना की जा सकती है?

जब मैं निराश होता हूँ, जब मुझे लगता है कि बुराई इस संसार पर भारी पड़ जाएगा, तब मैं फ्रैंक और एडना क्लार्क को स्मरण करता हूँ। उनके बारे में जितना कोई सोच सकता है वह उतना की थोड़ा है। वे मुख्य समाचार बनते ही नहीं हैं। संसार की हंसी और भलाई उनके साथ उनके घर में है। मैं उन लोगों के लिए खेद व्यक्त करता हूँ जो दूसरों को श्राप देते हुए दिन बिताते हैं, क्रोध से चिंघाड़ते हैं, स्वार्थी हैं, शराब पीते हैं और निष्क्रिय रहते हैं।

घटना और अभिप्राय (3:18)

यीशु का क्रूस पर दुःख भोग दो स्तरों में है। इसकी ऐतिहासिक, और भौतिक घटना। क्या एक मनुष्य को, जो यूसुफ़ का पुत्र था, वास्तव में पिन्तुस पिलातुस के शासन काल में यहूदिया में क्रूस पर चढ़ाया गया था? रोमी क्रूसीकरण का अभिप्राय क्या था? किस प्रकार के अपराध के लिए क्रूस का दंड दिया जाता था? कीलें कहाँ ठोकी जाती थी? उसके हाथ में? उसके कलाई में? क्या उसका पैर क्रूस के खड़े डंडे के बाहर होता था ताकि कील टखने के किनारे घुसे, या फिर क्या पैर को सहारा देने के लिए कोई रोक लगा होता था जिससे कील पैर के ऊपर से दंड तक घुसे? ये सभी प्रश्न और इनके जैसे अन्य प्रश्न यहाँ पूछे गए हैं। एक स्तर पर तो यीशु नासरी के क्रूसीकरण, एक घटना है, पर ही प्रश्न उठाया गया है।

पतरस का प्रसंग दूसरे स्तर पर था। इस घटना का अनुमान लगाया गया है लेकिन प्रेरित इस विषय पर नहीं ठहरता है। हाँ, यह घटना घटित हुई है। हाँ, यह एक भयानक घटना थी। हाँ, केवल सबसे बुरे अपराधियों को ही क्रूस का दंड दिया जाता था। फिर भी, पतरस घटना के साथ होने के बजाय इस घटना के अभिप्राय से अधिक चिंतित था। यह घटना अति महत्वपूर्ण था क्योंकि परमेश्वर के पुत्र को क्रूस पर चढ़ाया जा रहा था। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण था क्योंकि यीशु का जीवन पाप रहित था। यह इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि एक धर्मी ने पापियों के लिए अपना प्राण दे दिया।[25]

प्रतिनिधि प्रायश्चित (3:18)

प्रतिनिधि के रूप में कुछ करने के पूर्व इसे दूसरे के अनुभव के द्वारा किया जाना चाहिए। यदि हमारे किसी मित्र को अपनी ग्रीष्मकालीन अवकाश पेरिस में बितानी हो और अपनी तस्वीर हमें दिखाए और जो कुछ उसने वहाँ किया वह हमें वर्णन करे तो हम पेरिस को प्रतिनिधि के रूप में ही अनुभव कर सकते हैं। मसीही धर्म शिक्षा की सबसे प्राथमिक शिक्षा यह है कि यीशु ने क्रूस पर उन पापों के लिए दुःख उठाया जिसे उसने नहीं किया था। यीशु के बारे में यूहन्ना ने

कहा, "तुम जानते हो कि वह इसलिये प्रगट हुआ कि पापों को हर ले जाए; और उसके स्वभाव में पाप नहीं" (1 यूहन्ना 3:5)। क्योंकि यीशु पाप रहित थे इसलिए हमारे पापों के प्रतिनिधि के रूप में उसने दुःख उठाया। इस प्रकार हमारे पापों का मूल्य चुकाया गया। हम धर्मी बनाए गए। हमें न्यायसंगत, मेल मिलाप, मुक्त और बचाया गया है। यीशु पापों के लिए प्रायश्चित है (1 यूहन्ना 2:2), अर्थात, उसने हमें परमेश्वर के ग्राह्य बनाया है। क्रूस पर प्रायश्चित को सिद्ध कर दिया गया। यद्यपि हम शत्रु थे, फिर भी क्षमा दान के साथ हमें उसके सम्मुख प्रस्तुत कर दिया गया है। यीशु द्वारा दिए इस जीवन का आनंद हम वर्तमान में उठाते हैं और हमारी आशा यह है कि प्रभु अपनी सम्पूर्ण महिमा में वापस आएगा। तब परमेश्वर के आशीष की परिपूर्णता में उसके लोग सहभागी होंगे।

समाप्ति नोट्स

[1]ओरिगेन *कोन्ट्रा सेल्सम* 3.55. [2]"सजावट" शब्द का अनुवाद κόσμος *(कोसमोस)* से किया गया है, इस शब्द का प्रयोग प्रायः नया नियम में नकारात्मक अर्थ के साथ किया जाता है जिसका अर्थ है "सांसारिक" या इसी के समान शब्द। जबकि इस आयत में इस अर्थ से कोई सम्बन्ध नहीं है। यूनानियों ने विश्व के बारे में सोचा जहाँ वे सुन्दर और अच्छी रीति से आपसी सम्बन्ध बनाकर रहते थे। इस प्रकार यह शब्द किसी भी सुन्दरता और सुसज्जित वस्तु के लिये विशेष नाम बन जाता है। [3]जे. रामसे माइकल्स, *1 पीटर*, वर्ड बिब्लिकल कमेन्टरी, वॉल्यूम 49 (वाको, टेक्स.: वर्ड बुक्स, 1988), 159; प्लुटार्क *मोरालिया* 141ई. [4]जोसेफस *एन्टीक्विटीज* 4.8.15. [5]जोसेफस *अगैंस्ट एपियन* 2.25. [6]NASB यूनानी वाक्यांश के अर्थ को अच्छी रीति से समझता है। अधिक शाब्दिक रूप से शब्द कहते हैं, "निर्बल, पात्र स्त्री।" शब्द का अनुवाद "स्त्री" (γυναικεῖος, *गुनाइकीओस)* नया नियम में केवल यहाँ ही पाया जाता है। शब्द "पात्र" (σκεῦος, *स्केउओस)* को विभिन्न तरीकों से प्रयोग किया जाता है। यह एक प्रकार के किसी वस्तु को, कभी-कभी जार या डिब्बा को संदर्भित करता है। जैसा कि यहाँ प्रयोग किया गया है, यह स्त्री के भौतिक शरीर को दर्शाता है, जैसा कि 1 थिस्सलुनीकियों 4:4 में इसका वर्णन होता है। [7]इग्नाशियस *फ़िलाडेल्फ़ियन्स* 1. [8]अपने पत्रों में प्लिनी द यंगर (आरम्भिक द्वितीय सदी ई.) ने एक लघु टिप्पणी दिया जो कि अविश्वसनीय उत्साह को दर्शाती है, जिसके साथ ऊँचे पद वाले रोमी पुरुषों ने अपनी महिमा की माँग की। अपने मित्र मैक्सिमस को एक पत्र में, उन्होंने अपने दो दासों का उल्लेख किया, जिन्हें एक निश्चित वक्ता के दर्शकों में बैठने और सराहना करने के लिये प्रत्येक को तीन दीनार (एक सभ्य वेतन) के लिये किराये पर लिया गया था। उन्होंने कहा कि दासों को नहीं पता था कि क्या कहा जा रहा था और "बिना किसी संकेत के नुकसान होगा, उनकी प्रशंसा का समय कैसे पता चलेगा।" (प्लिनी द यंगर *लेटर्स* 2.14)। [9]अर्नेस्ट बेस्ट, *1 पीटर*, द न्यू सेन्चूरी बाइबल कॉमेंटरी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. इरडामंस पब्लिशिंग कं., 1971), 130; *द कम्युनिटी रूल* (1QS) 1.4. [10]कैरोल स्टुल्म्यूलर, *डियाने बर्गेंट, एट आल. एड्स. द कॉलेजविल पास्टोरल डिक्शनरी बिब्लिकल थियोलॉजी* (कॉलेजविल, मिनिसोटा: लिटर्जिकल प्रेस, 1996), 714.

[11]जे. एन. डी. केली, *अ कॉमेन्ट्री ऑन दि इपिसल्स ऑफ़ पीटर एण्ड ज्युड*, ब्लैक'स न्यू टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीज (लंडन: एडम एण्ड चार्ल्स ब्लैक, 1969), 141. [12]"अंतर्विवेकशीलता" के तर्ज पर 2:19 में प्रयुक्त शब्द की टिप्पणी देखें। *थियोलॉजिकल डिक्शनरी आफ द न्यू टेस्टामेंट*, एडिटर गेरहार्ड किट्टल, ट्रांसलेशन एण्ड एडीटर ज्योफरी डब्ल्यु. ब्रोमिली (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1971), 7:898-919 में देखें क्रिश्चयन मोरर, "σύνοιδα, συνείδησις" [13]Ινα *(हीना)*, का 3:16 में "इसलिए कि" अनुवाद किया गया है जो

परिणाम दर्शाता है। देखें वाल्टर बाऊर, *ए ग्रीक-इंगलिश लेक्शीकन आफ द न्यू टेस्टामेंट लिटेरेचर*, तीसरा संस्करण, संपादक फ्रेडरिक विलियम डांकर (शिकागोः यूनिवर्सिटी आफ शिकागो प्रेस, 2000), 477. [14]बेस्ट, 134. [15]माइकल्स ने इस अनुवाद का सटीक व्याख्यान किया है, 191-92. [16]प्रवक्ता ग्रन्थ 41:12 (REB)। [17]रोमन केथोलिक धर्म विज्ञान के अनुसार स्वर्ग में मसीह का निरंतर बलिदान होता है कि जब कभी प्रभु भोज मनाया जाता है तो यीशु वास्तव में दुःख उठाता है। पतरस और इब्रानियों की पत्री में लिखे वक्तव्य इस सिद्धांत पर विराम लगाता है। देखें "यूखारिष्ट," *आक्सफोर्ड डिक्शनरी आफ द क्रिश्चयन चर्च*, द्वितीय संस्करण, संपादक. एफ. एल. क्रास और ई. ए. लिविंग्स्टन (आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1974), 475-77. [18]यीशु का मृतकों के संसार में अवरोहण के बारे में मेक्कुलोक ने लिखा, "कम से कम द्वितीय सदी से, पाताल में अवरोहण मिलाकर, मृत्यु और पाताल पर विजय, मृतकों को प्रचार, और आत्माओं को स्वतंत्र करना, जैसे कोई जाना पहचाना और लोकप्रिय विश्वास नहीं था, लेकिन इसकी लोकप्रियता धीरे-धीरे बढ़ती गई" (जे. ए. मेक्कुलोक, *द हैरोइंग आफ हेलः ए कमपैरेटिव स्टडी आफ एन अर्ली क्रिश्चयन डॉक्ट्रीन* [एडीनबर्गः टी. & टी. क्लार्क, 1930], 45)। [19]वाक्यांश ἐν ᾧ, *en hōi* (उसी में) को दूसरे तरीके से भी समझा गया है। उपरोक्त वर्णित विभिन्न व्याख्या का मजबूती से समर्थन किया गया है। यहाँ इस व्याख्या में प्रयुक्त व्याकरण से संबंधित मामलों का विश्लेषण करने का स्थान नहीं है। जो अधिक जानकारी चाहते हैं वे माइकल्स, 205 का अध्ययन कर सकते हैं। [20]डी. ए. कारसन, "रेफ्लेक्शन आन द *बुक आई जस्ट वांट टू अ क्रिश्चयन* द्वारा डा. रूबेल शैली।" यह लेख निम्न वेबसाइट में पाया जाता है : www.mun.ca/rels/restmov/texts/rmeyes /carson.html. कारसन ने लिखा, "इसी समय, इसने [अमेरिकन रेस्टोरेशन मूवमेंट] बपतिस्मा पर एक दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया जिसको अमेरिकन रेस्टोरेशन मूवमेंट के अलावा किसी ने भी स्वीकार नहीं किया।" संभवतः कारसन ने समझा कि अमेरिकन रेस्टोरेशन मूवमेंट ने जिस दृष्टिकोण को अपनाया वह यह है कि जब किसी का बपतिस्मा होता है तो परमेश्वर कार्य करता है और आज्ञाकारी विश्वासी के पापों को उठा लेता है। वस्तुतः, इस विचार धारा को प्राचीन और आधुनिक युग के कलीसिया की इतिहास के दस्तावेजों और अन्य मसीही परंपराओं देखा जा सकता है।

[21]एवरेट फर्गूसन ने दूसरे सदी के कई दस्तावेजों को एकत्रित किया जिससे यह पता चलता है कि उस समय के कई कलीसियाओं ने बपतिस्मा को पाप से छुटकारा पाने का माध्यम समझा। यह शिक्षा नए नियम के समय के बाद भी जारी रहा। उन्होंने लिखा, "बपतिस्मा के बारे में आरंभिक द्वितीय सदी के वक्तव्य में एकता और जोश संभवतः बपतिस्मा और पाप क्षमा के बीच कलीसिया की आरंभिक दिनों से ही सीधा संबंध रहा है" (एवरेट फर्गूसन, *अर्ली क्रिश्चयन स्पीक्स* [आस्टीन, टेक्सासः स्वीट पब्लिशिंग कम्पनी, 1971], 38)। [22]फ्रेड गीली, "द फर्स्ट एण्ड सेकेंड एपिस्टल टू तीमोथी एण्ड टू टाइटस, इंट्रोडक्शन एण्ड एक्जेजिसिस," *द इंटरप्रेटर्स बाइबल*, संपादक जॉर्ज ए. बट्रिक (न्यू यॉर्कः अबिंगदन प्रेस, 1955), 11:453. [23]एडवर्ड गॉर्डन सेल्विन, *द फर्स्ट एपिसल ऑफ़ सेंट पीटरः द ग्रीक टेक्स्ट, विथ इंट्रोडक्शन, नोट्स, एण्ड एसेज*, थोरनापल कॉमेंटरीज, 2ड एड. (लंडन: मैकमिलिन एण्ड कं., 1947; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1981), 83. [24]किसी का "उल्लेख" से क्या तात्पर्य वह समस्याग्रसत हो सकता है। नया नियम का यूनानी पाठ का पुराना संस्करण जिसे यूनाइटेड बाइबल सोसाइटीज ने प्रकाशित किया है उसके परिशिष्ट में "इंडेक्स ऑफ़ कोटेशन्स" है। यदि हम उल्लेख को उद्धरण मानते हैं तो भजन का सबसे अधिक उल्लेख है। UBS का अत्याधुनिक संस्करण में "इंडेक्स ऑफ़ कोटेशन्स" के बजाय "इंडेक्स ऑफ़ अल्युजन एण्ड वर्बल पैराबल्स" पाया जाता है। विस्तृत मानदण्ड प्रयोग करें तो भजन के अलावा पुराने नियम के कई और उल्लेख नए नियम में पाया जाता है। [25]इस खंड का विचार एलिस्टर ई. मक्ग्राथ, *अंडरस्टैंडिंग जीसस* (ग्रैंड रैपिड, मिशिगन : ज़ोंदरवैन पब्लिशिंग हाउस, 1987), 22-27 द्वारा प्रेरित है।